देव-गुरु-शास्त्र आरती
तथा
प्रासंगिक भक्ति

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ-364250

भगवानश्री कुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प–२२६

ॐ

श्री
देव-गुरु-शास्त्र आरती
तथा
प्रासंगिक भक्ति

-: प्रकाशक :-
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट
सोनगढ-364250

प्रथम आवृत्ति प्रत : २००० वि. सं. २०६६ ई.स. २०१०

यह पुस्तकका लागत मूल्य रु. 12=90 है। अनेक मुमुक्षुओंकी आर्थिक सहायतासे इस पुस्तकका विक्रय-मूल्य रु. 10=00 रखा गया है।

मूल्य : रु. 10=00

मुद्रक :
कहान मुद्रणालय
सोनगढ-३६४२५० ☎ : (02846) 244081

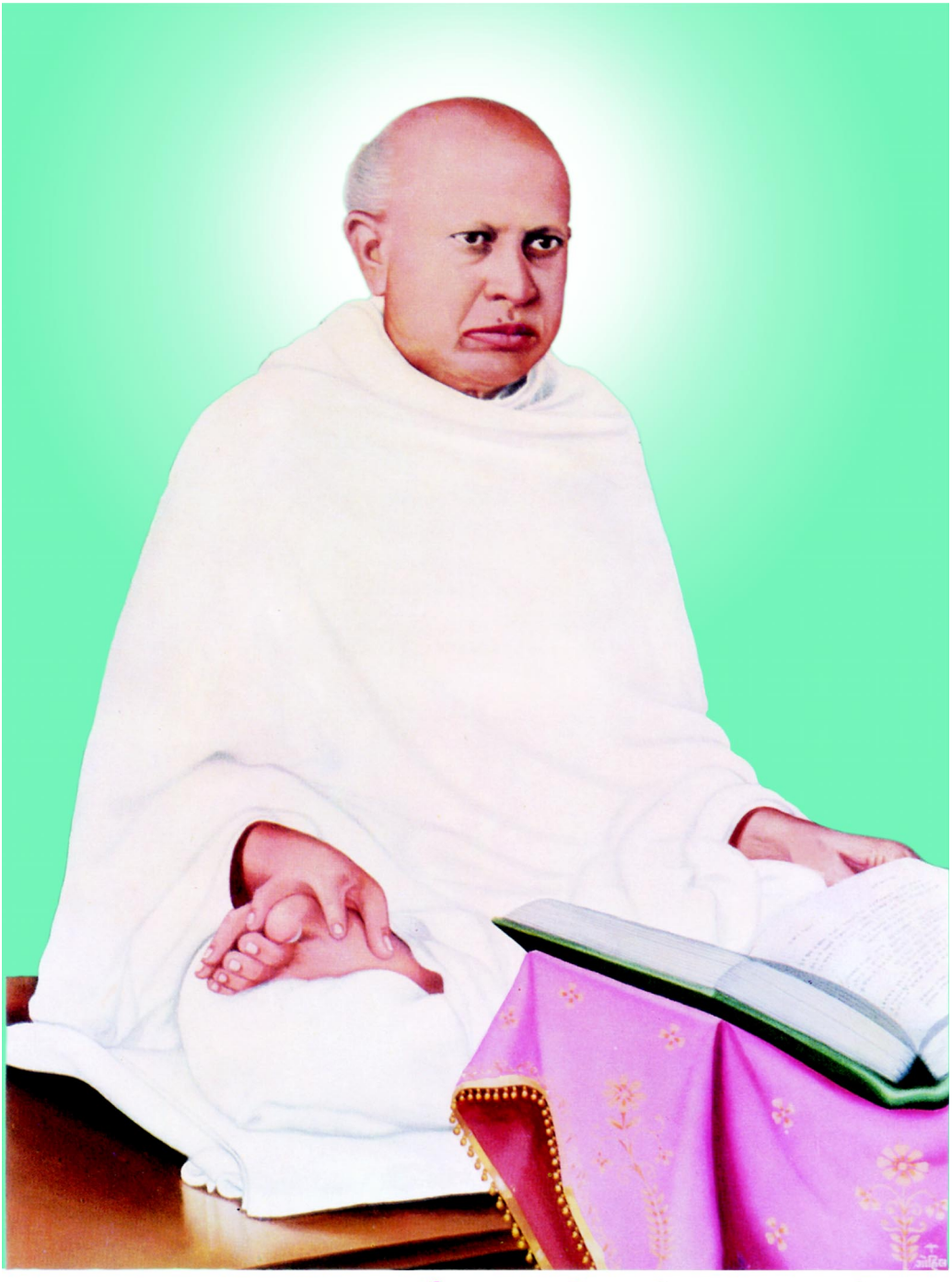

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

प्रकाशकीय निवेदन

वीतराग दिगम्बर जैनधर्मके सातिशय प्रभावक अध्यात्ममूर्ति स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्घाटनके साथ साथ वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सच्ची पहिचान देकर मुमुक्षु समाजके ऊपर असीम उपकार किया है। उनके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्र-पूजा-भक्तिकी प्रवृत्ति नियमित चल रही है। पूज्य गुरुदेव स्वयं भी सोनगढ़में नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। उनके ही पुण्यप्रतापसे सौराष्ट्र-गुजरात एवं अन्यत्र अध्यात्म प्रचारके साथ साथ जिनमंदिर-निर्माण एवं पंचकल्याणक और वेदीप्रतिष्ठाका युग चला।

तदुपरांत सुवर्णपुरीमें सीमंधर जिनालयके निर्माण एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठाके बाद तुरंत जिनमंदिरमें पूज्य बहिनश्री चंपाबेनके मार्गदर्शनमें पूजन-अर्चनके विविध प्रकार शुरू हो गये थे। मंदिरमें हररोज जिनेन्द्र आरती एवं विशेष प्रसंग पर विशेष आरतीके कार्यक्रम भी तबसे शुरू हो गये थे। जो सुवर्णपुरीके सभी मंदिरोंमें आज भी यथावत्रूपसे चल रहे हैं। तदुपरांत प्रसंगोपात विशेष भक्तिका भी कार्यक्रम चल रहा है। इसके लिए सभी मुमुक्षुओंके पास एक पुस्तक हो इस हेतुसे ये देव-गुरु-शास्त्र आरती एवं प्रासंगिक भक्तिका नया संकलित संस्करण प्रकाशित हो रहा है। आशा है मुमुक्षु समाज इस प्रकाशनसे लाभान्वित होगा।

पूज्य गुरुदेवश्रीका
१२१वाँ जन्मोत्सव
वि.सं. २०६६

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि0 जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,
सोनगढ (सौराष्ट्र)

अनुक्रमणिका

आरती उतारुं हुं तो सीमंधरनाथनी -- 5
जय सीमंधर जय सीमंधर ---------- 6
हुं तो आरती उतारुं ---------- 6
धन्य धन्य आज घडी ---------- 7
सुवर्णे सीमंधर भगवान ---------- 7
आरती उतारुं हुं सीमंधर देवनी ----- 8
आरती उतारुं हुं तो ---------- 8
आनंद मगल करुं आरती ---------- 9
इह विधि मंगल आरती ---------- 10
अघहर श्री जिनबिंब मनोहर -------- 10
जय जय आरती पंच परमेष्ठी ------ 11
अप्सरा करती आरती ---------- 11
जय जय आरती आदि जिणंदा ----- 12
श्री शांतिजिननी आरती ---------- 12
श्री नेमिजिननी आरती ---------- 12
श्री पार्श्वनाथजिन आरती ---------- 13
करो आरती वर्द्धमानकी ---------- 13
ॐ जय सन्मति देवा ---------- 14
ॐ जय जिनवरदेवा ---------- 15
भावी जिनवरनी आरती ---------- 15
महापद्मजिननी आरती ---------- 16
लाख लाख दिवडानी ---------- 16
श्री कुंदकुंदाचार्यदेवनी आरती ------- 17
मुनिराजनी आरती ---------- 17
श्री कुंदकुंदाचार्यदेवनी आरती ------- 18
जय बाहुबली जय बाहुबली --------- 18
बाहुबली आरती ---------- 19
श्री शास्त्रनी आरती ---------- 19
आवो पधारो हे जिनवरजी(मानस्तंभ) 20
भरते मानस्तंभजी (मानस्तंभजी) ----- 21
जय बावन जिनदेवा ---------- 21
निश्चय आत्मानी आरती ---------- 22
तीन चौबीसी जिन आरती --------- 23
जम्बूद्वीप की आरती ---------- 24-28

देव-गुरु भक्ति-गीत

वीरप्रभु सिद्ध थया छे ---------- 30
आजे वीर प्रभुजी निर्वाणपद -------- 31
वीरजीनुं शासन झूले रे ---------- 32
आज मंगळ दिन ---------- 34
आज दिव्यध्वनि छूटी ---------- 36
वीरजीनी वाणी छूटी रे ---------- 37
जय जय मुनिवर विष्णुकुमार ------- 39

पूज्य गुरुदेवश्री प्रति भक्ति

1. विदेहवासी कहानगुरु ---------- 40
2. आजे भरतभूमिमां.... ---------- 41
3. स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे -------- 43
4. कहानगुरु-स्तुति ---------- 46
5. धन्य-धन्य दिन आज है -------- 47
6. गुरु-जन्मजयंती ---------- 49
7. गुरु-जन्मवधामणां ---------- 50
8. गुरु-जन्मवधाई ---------- 51
9. माताने स्वप्नां लाध्यां ने..... -- 53
10. सुवर्णपुरे वस्या अेक संत ------ 53
11. अध्यातमरसना राजवी कहानगुरु 55
12. सुखशांतिप्रदाता ---------- 56
13. तुज पादपंकज ज्यां थयां.... -- 57
14. कहानगुरुने वंदन ---------- 58
15. संदेश देजे गुरुदेवने ---------- 59

पूज्य बहिनश्री प्रति भक्ति

1. सखी देख्युं कौतुक आज ------- 61
2. जन्म वधामणां ---------- 62
3. भव्योनां दिलमां दीवडा प्रगटावनार 63
4. आवी श्रावणनी बीजलडी -------- 64
5. मंगलकारी 'तेज' दुलारी ------- 66
6. कुंवरीने खम्मा खम्मा करती ---- 67
7. आज मंगळ मंदिर द्वार खूल्यां -- 68
8. आवी चैत्री कृष्णा अष्टमी ------- 69
9. सीमंधरनाथजी ! मोह टाळजो, --- 70
10. दर्शन दो माता मोरी, --------- 71
गुरुदेव प्रत्ये क्षमापाना-स्तुति -------- 72

ॐ

नमः श्री जिनेभ्यः।

श्री देव-गुरु-शास्त्र आरती

卐 श्री सीमंधरजिननी आरती 卐

(राग–अबोलडा शाने लीधा छे)

आरती उतारूं हुं तो सीमंधरनाथनी;
वारी वारी मुखडुं निहाळ....हो देव जय जिनराया. १

उपशम रसभरी मुद्रा निहाळी;
तुज पर जाउं बलिहारी....हो देव जय जिनराया. २

रत्नमणिना दीपक प्रगटावी;
आरती उतारुं नाथ तारी....हो देव जय जिनराया. ३

शुक्ल ध्याननी श्रेणीऐ चढिया;
केवळज्ञान उपजाया....हो देव जय जिनराया. ४

जगमग जगमग ज्योति प्रकाशी;
झळके छे ब्रह्मांडमांही....हो देव जय जिनराया. ५

ईन्द्रो नरेन्द्रो आरती उतारे;
भक्तिनी धून मचावे....हो देव जय जिनराया. ६

दिव्यध्वनिनो नाद ज छूट्यो;
झील्यो छे कहान गुरुदेवे....हो देव जय जिनराया. ७

जय जय आरती नाथ तुमारी;
भक्तोने आनंदकारी....हो देव जय जिनराया. ८

(6)

卐 श्री सीमंधर जिन आरती 卐

जय सीमंधर जय सीमंधर जय सीमंधर देवा,
माता तोरी सत्यवती ने पिता श्रेयांस राया;
पुंडरगिरिमें जन्म लिया प्रभु, साक्षात् अरहंतदेवा; जय० १

आप विदेह के हो तीर्थंकर, दिव्यध्वनि के दाता,
भरतक्षेत्रमें धर्मवृद्धि प्रभु! तारा नंदन द्वारा। जय० २

भरतक्षेत्रना भक्तो तारी करें हृदयसें सेवा;
भव भव होजो भक्ति तुमारी ओ देवनके देवा। जय० ३

सुवर्णपुरीमें नाथ पधार्या, दरशन दासने देवा;
भव भवमें प्रभु प्रीत तुमारी, चाहू चरणमें रहेवा। जय० ४

❀

卐 श्री सीमंधरजिन आरती 卐

हुं तो आरती उतारुं सीमंधरनाथनी रे;
सीमंधरनाथनी रे त्रिजगराजनी रे। हुं तो० १

पिता श्रेयांस कुळ दीपक देव छो रे,
माता सत्यदेवीना नंदन अहो रे। हुं तो० २

प्रभु वीतरागी शुद्ध ज्ञानघन छो रे;
नाथ हरखे नीरखुं हुं दिव्य चंदलो रे। हुं तो० ३

मुज आत्म चकोर ने चंद्र सांपड्यो रे;
प्रभु उदधि आनंदनो गृह वस्यो रे। हुं तो० ४

नाथ! महिमा न थाय मुज मुख थकी रे;
पूरण कैवल्य ज्ञानघन जिनपति रे। हुं तो० ५

जन्म सफळ मुज कृत्य दिन आजनो रे;
देव देख्यो त्रिलोकीनाथ जगतनो रे। हुं तो० ६

❀

(7)

卐 श्री सीमंधरजिन आरती 卐

धन्य धन्य आज घडी कैसी सुखकार है,
सीमंधर दरबार लगा सीमंधर दरबार है।

खुशियां अपार आज हर दिलपे छांई हैं,
दर्शनके हेतु सब जनता अकुलाई है, जनता अकुलाई हैं,
चारों ओर देखलो भीड बेसुमार है। सीमंधर० १

भक्तिसे नृत्य–गान कोई हैं कर रहे,
आतम सुबोध कर पापोंसे डर रहे, पापोंसे डर रहे;
पल पल पुण्यका भरे भंडार है। सीमंधर० २

जय जयके नादसे गुंजा आकाश है,
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आश है, निश्चय ये आश है;
देखलो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्तिद्वार है। सीमंधर० ३

❀

卐 श्री सीमंधरजिननी आरती 卐

सुवर्णे सीमंधर भगवान...आरती उतारुं प्रभुनी;
मारा जीवनना साचा सुकान...आरती०

ज्ञान दरशन अनंत गुणधारी प्रभु,
दिसे लोक अलोक अेक बिंदु समुं;
अेवी ज्ञानज्योति झळके अगाध...आरती०

महावीर्य चारित्र गुण पूर्ण अहा,
नाथ आनंद सागरमां म्हाली रह्या;
प्रभु अचळ अखंड अकंप...आरती०

शांत शांत शीतळ देव मुद्रा अहो,
जगे झळहळती ज्ञानज्योत तारी प्रभो;
प्रभु सागर समान गंभीर....आरती०

(४)

卐 श्री सीमंधरजिन आरती 卐

आरती उतारुं हुं सीमंधर देवनी;
सीमंधर देवनी सर्वे जिणंदनी...आरती०

रत्ने जडित थाळ मणिरत्न दीवडे,
आरती उतारुं हुं तो सर्वे जिणंदनी...आरती०

श्रेयांस कुळचंद सत्यदेवी जाया,
वृषभ लंछन सोहे सीमंधर राया;
हरख धारीने में तो प्रभु गुण गाया,
भक्ति भावे में तो प्रभु गुण गाया...आरती०

इन्द्र नरेन्द्र तारी आरती उतारे,
जिनचरणोमां मुकुट झुकावे;
नूपुरना नादे झननन नाचे...आरती०

हे जिनवर तुम पवित्र चरणथी,
भरतभूमि बनी छे उजियारी;
जिनचरणोमां जाउं वारी वारी,
वीर शासन पर जाउं बलिहारी....आरती

❀

卐 श्री सीमंधरजिन आरती 卐

आरती उतारुं हुं तो सीमंधरजिननी, वारी वारी मुखडुं निहाळ;
वीतरागी देख्यो देदार.

पद्मासन दृढ धारी नासिका दृष्टि, सोहे सोहे वीतरागी भाव;
नाथ तारो देख्यो देदार.

अंतर बाहिर शुद्ध स्फटिक चंदलो, अखंडज्ञान ज्योति अमाप;
वीतरागी देख्यो देदार.

समवसरण मध्य गंधकूटी सोहे, बिराजे सीमंधर देव;
जिन तारो देख्यो देदार.

(9)

भामंडल तेज सोहे त्रिजगधिराजने, वृक्ष अशोके सोहे नाथ;
वीतरागी देख्यो देदार.
अनंत गुणाकर जिनवरजी सोहे, सोहे सोहे विदेही नाथ। जिन०
आपना दर्शने प्रभु आतमा जगाड्यो, रत्नत्रयी प्रगटाव। जिन०

❀

卐 पंच परमेष्ठीनी आरती 卐

(राग–आरती)

आनंदमंगळ करूं आरती, संतचरणनी सेवा. टेक०
शिवसुखकारण विघ्न निवारण, पंचपरमेष्ठि देवा. आनंद०
प्रथम आरती अरिहंत देवा, कर्म खपे तत्‌खेवा;
सो इन्द्र करे तुम सेवा, वाणी अमृत मेवा. आनंद०
बीजी आरती सिद्ध निरंजन, भंजन भवभयकेरा;
चिदानंद सुखकंद अखंड, मिटे भवोभव फेरा. आनंद०
त्रीजी आरती श्री आचार्यजी, पंचाचार पाळे रूडा;
संघशिरोमणि शोभे दिनमणि, दाता बोध अनेरा. आनंद०
चोथी आरती उपाध्यायजी, भणे भणावे अेवा;
सूत्र अर्थ करे तत्‌खेवा, सेवा करे तस देवा. आनंद०
पंचमी आरती सर्व साधुजी, भारंड पंखी जेवा;
आत्मस्वरूप साधे दूषण टाळे, अविचळ शिवसुख लेवा. आनंद०
गाय शीखे ने सूणे आरती, भविजन भावे अेवा;
तेहतणा पातक दूर जाअे, नित्य नित्य मंगळ मेवा. आनंद०
भाव धरीने गावे आरती, पंच परमेष्ठी देवा;
भक्तजन भावे गुण गावे, लेवा शिवसुख मेवा. आनंद०

❀

卐 पंच परमेष्ठीनी आरती 卐

ईह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे. टेक

पहली आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा. इह० १

दूसरी आरती सिद्धनकेरी, सुमरन करत मिटे भवफेरी. इह० २

तीजी आरती सूर मुनिंदा, जनम मरन दुःख दूर करिंदा. इह० ३

चौथी आरती श्रीउवज्झाया, दर्शन देखत पाप पलाया. इह० ४

पांचमी आरती साधु तिहारी, कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी. इह० ५

छट्ठी आरती श्रीजिनवाणी, 'द्यानत' सुरग मुक्ति सुखदानी. इह० ६

卐 चौवीस तीर्थंकरोनी आरती 卐

अघहर श्री जिनबिंब मनोहर चौवीस जिनका करो भजन।
आज दिवस कंचन सम उगियो, जिनमंदिरमें चलो सजन। टेक

न्हवन थापना सहस्त्रनाम पढ, अष्टविधार्चन पूज रचन,
आरति अरु जयमाल स्तुति, स्वाध्याय त्रयकाल पठन;
जय जय आरति सुरनर नाचत, अनहद दुंदुभि बाजे बजन;
रत्नजडित कर थाल मनोहर, ज्योति अनुपम धूम्रतजन। अघ० १

ऋषभ, अजित, संभव सुखदाता, अभिनंदन के नमूं चरन,
सुमति, पद्मप्रभ, देव सुपारस, चन्द्रनाथ वपु शुभ्रवरन;
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांस अरु, वासुपूज्य भव तारनतरन,
विमल, अनंत, धर्मजिन शांति, कुंथु, अरह हर जन्ममरण। अघ० २

मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नमिजिन, नेमि, पार्श्व हर अष्ट करम,
नाथवंश है उन्नत कर सत, अंतिम सन्मति देव शरन;
समवसरणकी अगणित शोभा, बार सभा उपदेश धरन,
जिन उद्धारक, त्रिभुवन तारक, राव-रंकको है जु शरन। अघ० ३

तीर्थंकर गुण-माल कंठकर, जाप जपो तिन करो कथन;
देव-शास्त्र-गुरु विनय करो, इन तीन रतनका करो जतन। अघ० ४

卐 पंच परमेष्ठीनी आरती 卐

जय जय आरती पंच परमेष्ठी, चेतनरामी नमुं तुज स्वामी,
पहेली आरती मिथ्या टाळे, सम्यग्ज्ञान प्रकाश निहाळे. जयजय०
बीजी आरती बीज उगाडे, द्वंद्वातीतपणाने पमाडे. जयजय०
त्रीजी आरती त्रिरत्न शुद्धि, थाओ सहेजे आत्मस्वरूपी. जयजय०
चोथी आरती अनंत चतुष्टय, परिणामे कृतकृत्यस्वरूप. जयजय०
पंचमी आरती पंच परमेष्ठी, शुद्ध स्वभाव सहज लहे अरथी. जयजय०

❀

卐 ऋषभजिन आरती 卐

(वीरकुंवरनी वातडी कोने कहीओ—देशी)

अप्सरा करती आरती जिन आगे, हांरे जिन आगे रे जिन आगे,
हां..रे अे तो अविचळ सुखडां मागे, हां..रे नाभिनंदन पास. अप्सरा०
ताथ नाटक नाचती पाय ठमके, हांरे देय चरणे झांझर झमके;
हां..रे सोवन घुघरीया घमके, हां..रे लेती फूदडी बाल. अप्सरा०
ताल मृदंग ने वांसळी डफ वेणा, हांरे रूडां गावती स्वर झीणा,
हां..रे मधुर सुरासुर नयणां, हां..रे जोती मुखडां निहाळ. अप्सरा०
धन्य मरुदेवा मातने प्रभु जाया, हरि तोरी कंचनवरणी काया;
हां..रे में तो पुण्ये पूरन पाया, हां..रे देख्यो तारो देदार. अप्सरा०
प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हरि प्रभु सेवक हुं छुं तारो;
हां..रे भवोभवना दुःखडां वारो, हां..रे तमे दीनदयाळ. अप्सरा०
सेवक जाणी आपनो चित्त धरजो, हरि मोरी आपदा सघळी हरजो;
हां..रे भक्तजनोने सुखिया करजो, हां..रे जाणी पोतानो बाळ. अप्सरा०

❀

卐 आदि जिणंदनी आरती 卐

जय जय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवी को नंदा;
पहेली आरती पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे. जय. १
दुसरी आरती दीनदयाळा, सुवर्ण नगरमां जग अजवाळ्यां. जय. २
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुरनर इंद्र करे तोरी सेवा. जय. ३
चोथी आरती चौगति चूरे, मनवांछित फल शिवसुख पूरे. जय. ४
पंचम आरती पुन्य उपाया, भक्तजने ऋषभ गुण गाया. जय. ५

❀

卐 श्री शांतिजिननी आरती 卐

जय जय आरती शांति तुमारी, चरणकमलकी मैं जाउं बलिहारी. १
विश्वसेन अचिराजीको नंदा, शांतिनाथ मुख पूनम चंदा. जय० २
चालीस धनुष्य सोवनमय काया, मृगलंछन प्रभुचरण सुहाया. ज० ३
चक्रवर्ती प्रभु पांचमा सोहे, सोळमा जिनवर जग सहु मोहे. ज० ४
मंगळ आरती तोरी कीजे, जन्मजन्मनो लाहो लीजे. जय० ५
कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नरनारि अमर पद पावे. जय० ६

❀

卐 श्री नेमिजिननी आरती 卐

मीठी लागे छे नेमिनाथनी उपासना,
टाळे ए सघळा विभाव रे, नेमजीनी प्यारी उपासना;
अनादिकाळना दुष्ट अज्ञाननो निश्चय करे ए नाश रे. नेमजीनी....
कीधा विदारण मिथ्यात्व मोहने, सरजावे समकित सार रे. नेमजीनी....
वेगे विदारी निश्चय ए वासना, काढे शुभाशुभ भाव रे. नेमजीनी....
अनुक्रमे जिनमां नित्य उपासना, आपे ए अमृत आवास रे. नेमजीनी....
मीठी लागे छे मने जिननी उपासना...नेमजीनी....

(13)

卐 श्री पार्श्वनाथजिन आरती 卐

जय पारस जय पारस जय पारस देवा...

माता तोरी वामा देवी पिता अश्वसेना,
काशीजीमें जन्म लिया प्रभु हो देवनके देवा...जय. १

आप तेईसवें हो तीर्थंकर, भक्तों को सुखमेवा;
पांचों पाप मिटाकर हमरे शरण देओ जिन देवा...जय. २

नागिन–नाग बचाकर तुमने भवसें किया पारा;
वैरागी हो मुनिपद धारे वंदन आज अमारा...जय. ३

आतमध्यान लगाकर प्रभुजी केवलज्ञान जगाया,
संमेदशिखरकी सुवर्ण टूंकसे सिद्धातम पद पाया...जय. ४

दूजो और कोई ना दीखे पार लगाओ खेवा;
आनंदमंगल वृद्धि होवे जो करे आपकी सेवा...जय. ५

❀

卐 श्री वर्द्धमान जिननी आरती 卐

करौं आरती वर्धमानकी, पावापुर निरवान थानकी.....करौं०

राग विना सब जगजन तारे, द्वेष विना सब करम विदारे;
शील धुरंधर शिवतिय भोगी, मन-वच-कायन कहिये जोगी। करौं०

रतनत्रयनिधि, परिग्रह हारी, ज्ञान–सुधा–भोजनव्रतधारी;
लोक अलोक व्याप निजमांही, सुखमय इन्द्रियसुख दुःख नांही। करौं०

पंचकल्याणक पूज्य विरागी, विमल दिगंबर अंबर–त्यागी;
गुणमणि भूषण, भूषणस्वामी, जगत–उदास जगंतरजामी। करौं०

कहैं कहांलौं तुम सब जानों, 'द्यानत'की अभिलाष प्रमानौं। करौं०

❀

(14)

卐 श्री महावीरजिन आरती 卐

ॐ जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा;
वीर महा अति वीर प्रभुजी, वर्धमान देवा. ॐ० १

त्रिशला उर अवतार लियो प्रभु सुरनर हर्षाये;
पंद्रह मास रतन कुंडलपुर, धनपति वर्षाये. ॐ० २

शुक्ल त्रयोदशि चैतमासकी, प्रभु आनंद करतारी;
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव, ठाठ रचे भारी. ॐ० ३

त्रीस वर्ष लों रहे गृहमें, प्रभु बाल ब्रह्मचारी;
राज त्याग कर भर यौवनमें, मुनिदीक्षा धारी. ॐ० ४

बारह वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया;
झलके लोकालोक ज्ञानमें, यश भरपूर लिया. ॐ० ५

कार्तिक श्याम अमावस के दिन, जाकर मोक्ष बसे;
पर्व दिवाली चला तभीसे घर-घर दीप जले. ॐ० ६

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, शिवमग परकाशी;
हरिहर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो, जयजय अविनाशी. ॐ० ७

दीनदयाला जगप्रतिपाला सुरनरनाथ जजे;
सुमरत विघ्न टरे इक छिनमें, पातक दूर भजै. ॐ० ८

चोर भील चान्डाल उबारे, भवदुःख हर तुही;
पतित जान शिवराम उच्चारे, हे जिन शरण गही. ॐ० ९

卐 ॐ जय जिनवरदेवा 卐

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे.....जगदीश्वर पदपंकजसेवा.....ॐ
दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि–सिद्धि–सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार.....ॐ
आज अमारे आंगण पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडधातकी–महाविदेही भावी भगवंता.....ॐ
पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक–तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ! आतमना आधार!.....ॐ
कृपा करो हे जिनवर! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज!.....ॐ

❀

卐 भावी जिनवरनी आरती 卐

(आगमनी आसातना नव करीअे—अे राग)

भावि जिननी आरती करुं मन भावे, हांरे जेथी अजरामर पद पावे;
हांरे तेथी जन्म मरण दूर जावे, हांरे आपे शिवपुर वास. भावि० १

आरती पहेली ज्ञानकी सुखकारी, हां रे मति श्रुत अवधि भारी;
हांरे मनःपर्यय केवल धारी, हांरे थाय अज्ञान दूर. भावि० २

आरती बीजी दर्शन अघहारी, हांरे पांच भेद कह्या छे भारी;
हांरे ते तो सेवो श्रद्धा धारी, हांरे जगमांही सार. भावि० ३

आरती त्रीजी चरणनी चितआणुं, हांरे पांच भेदे शुद्ध वखाणुं;
हांरे रोके आस्रव आवतुं जाणुं, हांरे गुण अनंतनी माळ. भावि० ४

आरती चोथी तपथी धरे प्यार, हांरे तप तपीअे बार प्रकार;
हांरे क्षय करे कर्म चार चार, हांरे जेथी अविचल सुख. भावि० ५

❀

(16)

卐 महापद्मजिननी आरती 卐

आरती करौं महापद्म तेरी, अमल अबाधित प्रभु गुण केरी. टेक
अचल अखंड अतुल अविनाशी, लोकालोक सकल परकाशी. आरती. १
ज्ञानदरससुखबल गुणधारी, परमातम अविकल अविकारी. आरती २
क्रोधआदि रागादि न तेरे, जनम जरामृत कर्मन नेरे; आरती ३
अवपु अबंध करणसुखनासी, अभय अनाकुल शिवपदवासी, आरती ४
रूप न रेख न भेद न कोई, चिन्मूरति प्रभु तुम ही होई; आरती ५
अलख अनादि अनंत अरोगी, सिद्ध विशुद्ध सुआतम भोगी. आरती ६
गुन अनंत किम वचन बतावैं, दीपचंद भवि भावन भावैं. आरती ७

卐 आरती 卐

लाख लाख दीवडानी आरती उतारजो,
लाख लाख तोरण बंधाय;
आंगणिये अवसर आनंदना.....(टेक)

लाख लाख द्रव्योनी पूजा रचावजो;
लाख लाख हाथे कराय. आंगणिये...लाख० १

खोबे खोबे रंग उडे गुलालना,
लाखो वधामणां जिनवरना आवतां;
लाखेणी भक्ति कराय. आंगणिये....लाख० २

गावो गावो गीत गाजो गवरावजो,
ताने ताने नाच नाची नचावजो;
लाखेणा ल्हावा लेवाय. आंगणिये...लाख० ३

लाख लाख गुरुजीना गुण गवरावजो;
लाख लाख (जीवोना) उद्धार करनार. आंगणिये....लाख० ४
जयकार जगतमां फेलाय आंगणिये...लाख लाख०

卐 श्री कुंदकुंदाचार्यदेवनी आरती 卐

हुं तो आरती उतारूं प्रभु कुंदनी रे;
प्रभु कुंदनी रे आचार्यदेवनी रे. हुं तो.

विदेह क्षेत्र जई भरतमां पधारीया रे;
सीमंधर देवना संदेशा रूडा लावीया रे. हुं तो.

चौद पूर्वना रहस्ये शास्त्र गूंथीया रे;
श्रुतज्ञाननी तें नहेरो वहेवडावीयुं रे. हुं तो.

अचल ज्योति अखंड अनूपम अछे रे;
आत्म ख्याति खजाना अणमूल्य छे रे. हुं तो.

निज स्वरूपमांहे कुंदमुनि झूलता रे;
धन्य धन्य वनवासी अे मुनिवरा रे. हुं तो.

तुज शासनना नूर भरत भूमिअे रे;
दिव्य वाणीना दातार कानगुरु अछे रे. हुं तो.

❀

卐 मुनिराजनी आरती 卐

आरती कीजे श्री मुनिराज की, अधम उधारन आतम काजकी. टेक
जा लच्छीके सह अभिलाखी, सो साधन करदमवत भाखी. आ०-१
सब जग जीत लियो जिन नारी, सो साधन नागनिवत छारी. आ०–२
विषयन सब जगजिय वश कीने, ते साधन विषवत तज दीने. आ०–३
भुविको राज चहत सब प्रानी, जीरन तृणवत त्यागत ध्यानी. आ०–४
शत्रुमित्र दुःखसुख सम मानै, लाभ अलाभ बरावर जानै. आ०–५
छहों काय पीहरव्रत धारें, सबको आप समान निहारें. आ०–६
इह आरती पढै जो गावै, 'द्यानत' सुरगमुक्ति सुख पावै. आ०–७

❀

卐 श्री कुंदकुंदाचार्यदेवनी आरती 卐

अहो आरती उतारूं भगवान, जय कुंदकुंद प्रभुनी,
मारा जीवनना साचा सुकान...जय०

प्रभु सीमंधर देवना शरणे रही,
साक्षात् दिव्यध्वनिना धोधने ग्रही;
श्रुतसागर ऊछळ्या महान, जय कुंदकुंद प्रभुनी.

आज रत्न मणिना हुं दीपक करुं;
भक्तिभावे हे गुरु तारुं पूजन करुं;
तुज चरणोमां वारी वारी जाउं...जय कुंदकुंद प्रभुनी.

मोक्षमार्ग दातार कहान भरते दीठा,
महा निरपेक्ष तत्त्वनी वही गंगा;
प्रभु ज्ञान खजाना अखूट...जय कुंदकुंद प्रभुनी.

महा दिव्य रहस्य आ भरते खोल्या,
खरी स्वतंत्रतानां स्वराज स्थाप्या;
शिरताज अेक भरते गुरु कहान....जय कुंदकुंद प्रभुनी.

❀

卐 बाहुबली भगवाननी आरती 卐

(राग : जय सीमंधर जय सीमंधर...)

जय बाहुबली जय बाहुबली, जय बाहुबली देवा....
माता तोरी देवी सुनंदा, पिता ऋषभराया,
अयोध्यामें जन्म लिया प्रभु, अष्टापद शिवपाया...जय०

आप भरतके महा तपस्वी, तीन रतनके धारी,
सुवर्णपुरीकी शोभा बढाई, मुनिसेवा मन भाई...जय०

सुवर्णपुरीके भक्त तुम्हारी करे हृदयसे सेवा;
भव भव होजो भक्ति तुम्हारी ओ देवनके देवा...जय०

कहान गुरु अरु भगवती माता, भक्ति हृदयसे करते;
भक्तोंको ज्ञायक समझाकर शिवकी राह दिखाते...जय०

(19)

卐 बाहुबली आरती 卐

(ॐ जय जिनवरदेवा–राग)

ॐ जय बाहुबली देवा स्वामी जय बाहुबली देवा (२)
देख्या देख्या ऋषभनंदनने, दर्शन मंगलकार....ॐ जय०

बार बार मास तपस्या करते, अंतरमें लवलीन,
वेलडीयुं वींटाणी देहे, निश्चल ध्यान धरनार....ॐ जय०

भरतचक्री मुनिदर्शने संचर्या, पूज्या बाहुबली पाद,
बाहुबलीजीए श्रेणी मांडी, पाम्या केवलज्ञान....ॐ जय०

महाभाग्ये गुरुदेवनी साथे, यात्रा करी मंगलकार,
गुरुजी प्रतापे आनंद वरसे, वरसे अमृतधार....ॐ जय०

स्वर्णपुरीमें बाहुबली देवा, स्वागत मंगलकार,
आवो आवो अम आंगणिये, रत्ने वधावुं आज....ॐ जय०

❀

卐 श्री शास्त्रनी आरती 卐

महामांगलिक सत्य ज्ञानदाता रे,
सत्य शास्त्रनी उतारूं हुं तो आरती रे.
रे प्रभु! साक्षात् दिव्यध्वनि दातार रे. सत्य शास्त्र–१

कंचन पत्रमां रत्नाक्षरोथी, हीराना साथीया पुरावुं;
अष्टप्रकारी शास्त्रपूजा रचावुं, थाळ भरी मोतीडे वधावुं रे. सत्य–२

निरपेक्ष तत्त्व शास्त्र तुमे प्रकाशो, निरालंबन मंत्र मीठा,
निज रसभारना स्वभावे भरेला, वीतरागी शांत रस दीठा रे. सत्य–३

अक्षर परब्रह्म स्याद्वादांक मुद्रा, स्वरूपानंद राज्यधानी,
चौद ब्रह्मांड भाव भेदे भरेली, कैवल्यज्ञान गुणखाणी रे. सत्य–४

❀

(20)

卐 श्री सीमंधरजिन आरती (मानस्तंभजी) 卐

आवो पधारो हे जिनवरजी (मानस्तंभजी)
शा करीअे सन्मान, हां रे प्रभु शा करीअे सन्मान.

सौराष्ट्रे प्रभु प्रथम पधार्या, मानस्तंभ देव मनहार;
गगने अडंता शिखर अहो आ, त्रिभुवनना शणगार;
हां रे प्रभु त्रिभुवनना शणगार....आवो.

प्रथम आरती ज्ञानस्वरूपी, ज्ञानेश्वर भगवान,
केवळ ज्योति प्रकाशे प्रभुजी, ज्ञानखजाना अमाप;
हां रे प्रभु ज्ञानखजाना अमाप....आवो.

दूसरी आरती दर्शन गुणनी, क्षायिक दर्शन नाथ,
अभेद अंतर अवलंबनमां, रमी रह्या छो नाथ;
हां रे प्रभु रमी रह्या छो नाथ....आवो.

तीसरी आरती चारित्र गुणनी, पूर्णानंद स्वभाव,
आनंदसागर ऊछळे प्रभुजी, शांत शीतळ सुखधाम;
हां रे प्रभु शांत शीतळ सुखधाम....आवो.

चोथी आरती अनंत वीर्य, स्वभावी दीसो छो देव,
सर्व प्रदेशे स्वरूप बळ अहो, खीली गयुं अगाध;
हां रे प्रभु खीली गयुं अगाध....आवो.

पांचमी आरती अनंत गुणधारी, छो हे भगवान,
अनंत महिमावंत प्रभुनो, बोलो जय जयकार;
हां रे सहु बोलो जय जयकार.

आवो आवो मानस्तंभप्रभुजी शा करीअे सन्मान, हां रे०

卐 आरती (मानस्तंभजी) 卐

भरते मानस्तंभजी पधारीया जीरे.
आवो सहु आरति उतारीअे.
मंगळ महोत्सव मारे आंगणे जी रे...आवो० १

सौराष्ट्र देशना सुवर्ण नगरमां,
मानस्तंभ बन्या छे रळियामणा जी रे...आवो० २

रत्नोनां थाळ भर्या लाख लाख दिवडे,
आरती उतारूं मारा नाथनी जी रे...आवो० ३

नाथ तारा चरणोमां गणधरो नमी रह्या,
मुकुट झुकावे इन्द्रो चरणमां जी रे...आवो० ४

साक्षात् विदेही मानस्तंभ अहो आंगणे,
मोतीडे वधावुं मारा नाथने जी रे...आवो० ५

वीणा मृदंग करताल सूर झांझना,
झणकार गगन मांही गूंजता जी रे...आवो० ६

इन्द्र धरणेन्द्र नृत्य गान करे भावथी,
घननन घुघर माळ ठमकती जी रे...आवो० ७

भरते अजोड संत अेक गुरु कहान छे,
सत्य शासनने थंभावीया जी रे...आवो० ८

❀

卐 श्री नंदीश्वरद्वीपनां जिनबिंबनी आरती 卐

जय बावन जिनदेवा, प्रभु बावन जिन देवा;
आरती करुं तुम चरणे (२)
भव जल नदी नावा, जयदेव जयदेव....टेक.

अष्टम शोभे द्वीप नंदीश्वर नामा (२)
प्रतिदिश तेरह तेरह, अकृत्रिम जिनधामा....जयदेव. १

(22)

अंजन भूधर अेक, दधिमुख नग चार (२)
गजमति रतिकर पर्वत, तेरह गिरि सार...जयदेव. २
अेवं चौदिशि बावन, पृथ्वीवर लंबा (२)
गिरिपति ज्येष्ठ जिनालय, मणिमय जिनबिंबा...जयदेव. ३
शुभ अषाडे कार्तिक, फाल्गुन सुदी पक्षा (२)
इन्द्रादिक करे पूजा, अष्टाह्निक दक्षा...जयदेव. ४
अष्टम दिनथी मंडित, पूनम पर्यंता (२)
जिन गुण सागर गावे, पावे सुरकान्ता...जयदेव. ५

❀

卐 निश्चय आत्मानी आरती 卐

(चौपाई)

मंगल आरती आतमराम, तनमंदिर मन उत्तम ठाम. मंगल० टेक.
समरस जलचंदन आनंद, तंदुल तत्त्वस्वरूप अमंद. मंगल० १
समयसार फूलनकी माल, अनुभव सुखनेवज भरि थाल. मंगल० २
दीपकज्ञान ध्यानकी धूप, निरमलभाव महाफलरूप. मंगल० ३
सुगुण भविकजन इकरंगलीन, निहचै नवधा भक्ति प्रवीन. मंगल० ४
धुनि उतसाह सु अनहद गान, परम समाधि निरत परधान. मंगल० ५
बाहिज आतमभाव बहावै, अंतर हूवै परमातम ध्यावै. मंगल० ६
साहब सैवक भेद मिटाय, 'द्यानत' एकमेक हो जाय. मंगल० ७

❀

(23)

卐 तीन चौबीस जिन आरती 卐

(राग–विदेहवासी कहानगुरु...)

चौवीस दीपकोंना थाल सजावो रे,
तीन चौवीसी जिन आरती उतारो रे...चोवीस...

भूत-वर्त-भावि जिन सुवर्णे पधार्या,
भक्तजनो सहु आरती उतारो रे,
मंगलगीतोंथी जिनालय गजावो रे...चोवीस...

अतीतकालना चोवीस जिनवर पधार्या,
आगत चोवीस जिनजी पधार्या,
वंदन-स्तुति-पूजन मंडल रचावो रे,...चोवीस...

ऋषभ, अजीत, संभव, अभिनंदन,
सुमति, पद्म, सुपास, चंद्र जिनवर,
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांसराया रे...चोवीस...

वासुपूज्य, विमल, अनंत, जिनराज,
धर्म, शांति, कुंथु, अर, मल्लिनाथ,
मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व जिणंदा...चोवीस...
महावीर प्रभुजीनी आरती उतारो रे...चोवीस...

बोंतेर जिनवर मंगल पधार्या,
कहानगुरुना पुनित प्रतापे,
भगवती मातना मंगल प्रभावे,
भावभक्ति सह पूजन रचावो रे...चोवीस...

卐 जंबूद्वीपकी आरती 卐

जय बोलो जय बोलो, शाश्वत जिनवृंदकी जय बोलो।

स्वर्णपुरीकी स्वर्णधरा पर, जम्बूद्वीपकी रचना अनुपम,
पधारो तीरथनाथ प्रभुकी जय बोलो

षोडश जिनवर मेरु पर सोहे, अंर्तयामी भक्त मन मोहे,
गजदंत गिरिके है जिनदेव, प्रभुकी जय बोलो।

जंबू शाल्मलि वृक्ष पर सोहे, कुलपर्वत पर षट् जिनदेवा,
आवो पधारो नाथ प्रभुकी जय बोलो।

विजयारधके चौंतीस जिनगृह, वक्षारगिरिके षोडश जिनालय,
रत्नमयी वीतराग प्रभुकी जय बोलो।

गुणरत्नाकर गुणमणि ज्ञानी, परमविरागी केवलज्ञानी,
करुणामूर्ति जगनाथ प्रभुकी जय बोलो।

वंदन, कीर्तन, घंटनाद स्तुति, जगतसाक्षीकी मंगल आरती,
धर्मतीर्थके नाथ प्रभुकी जय बोलो।

कहानगुरुकी कृपा अपारी, जम्बूद्वीपकी रचना न्यारी,
वर दे भगवती मात प्रभुकी जय बोलो।

(25)

卐 जम्बूद्वीप की आरती 卐

(आओ सहु आरती उतारीए)

जम्बूद्वीप सुवर्णे पधारिया जी रे,
आवो सहु आरती उतारीए।
सुदर्शन मेरुना सोळ सोळ मंदिरो,
रत्नमणिना बिंब सोहता जी रे....आवो सहु...
गजदंत शिखरे जिनालय बहु शोभतां,
पूजन रचावीए भावथी जी रे....आवो सहु...
विजयार्द्ध पर्वत ने वक्षारगिरि पर,
मंदिरो अकृत्रिम सोहता जी रे...आवो सहु...
कुलगिरि पर्वतना मंदिरोनी दिव्यता,
शी शी करुं तुझ सेवना जी रे....आवो सहु...
रत्नमणिना दीपको लईने,
भावे प्रभुने पूजीए जी रे....आवो सहु...

❀

卐 जम्बूद्वीप की आरती 卐

(राग : ॐ जय जिनवरदेवा)

जय शाश्वत जिनदेवा, प्रभु शाश्वत जिनदेवा;
आनंद मंगल करुं आरती, स्वर्णमें जय जयकार....जयदेव जयदेव.
मेरु सुदर्शन उन्नत सोहे, सोलह जिनमंदिर;
अकृत्रिम जिनालय अद्‌भूत, अद्‌भूत जंबूद्वीप....जयदेव जयदेव.
गगनमंडलसे ऊतरे सुरेन्द्र, भक्ति करे सहु साथ;
भरतभूमिमें सुरनर करते, आरती मंगलकार....जयदेव जयदेव.
गुरु कहान के परम प्रताप से शाश्वत जिनवरवृंद;
आवो आवो भक्तों वधावो, स्वर्णे शाश्वत जिनवृंद....जयदेव जयदेव.

❀

(26)

卐 जम्बूद्वीप की आरती 卐

(राग - ॐ जय जिनवर देवा)

ॐ जय जिनवर देवा, (२)
शाश्वत जिनवर जंबूद्वीपके....आरती मंगलकार...

जम्बूद्वीपकी रचना दिव्य, दिव्य जिन दिदार,
देखत भविजन उल्लसित होते, करते जयजयकार....आरती०

सोलह मंदिर शोभ रहे हैं, मेरु सुदर्श महान,
कुलगिरि षट् सिद्धकूट के ऊपर, प्रभुका अचल स्थान....आरती०

गजदंत जम्बू शाल्मली वृक्षके, जिनवर आनंदकंद,
विजयारध वक्षारके प्रभुवर, भक्तोंसे हैं वंद्य....आरती०

वसु प्रातिहार्य मंगलकारी, रचना अद्‌भुत जान,
सुर विद्याधर शिर झुकाये, जय जय श्री भगवान....आरती०

स्तुति वंदना भक्ति करते, नाचत ताल बजाय,
रत्नमणिके दीपक लेकर, हर्षित सुरनर राय....आरती०

कृपासिंधु हो दीनदयाला, शरणागत आधार,
गुरुवर कहान के परम प्रतापसे, भविजन हो भवपार....आरती०

मंगल महोत्सव सुवर्णपुरीमें मंगल मंगलकार,
पूजन स्तुति जयमाला मंगल आरती मंगलकार....आरती०

(27)

卐 जम्बूद्वीप की आरती 卐

(राग—जय जय आरती शांति तुम्हारी)

जय जय आरती शाश्वत जिनकी, चरण कमलमें जाऊं बलिहारी,
प्रथम मेरु सुदर्शन महा, षोडश जिनमंदिर है जहां;
स्वहित कारण शीश नमाऊं, स्तुति वंदना भक्ति कराऊँ।

सुदर्शन मेरु के सोलह मंदिर, दक्षिण उत्तर कुलगिरि तीन तीन,
हिमगिरि हेम समान जानो, महाहिमवान रूपा समानो।

गिरि निषध तप्त सुवरन रूपा, तीनों दक्षिण दिश अनूपा,
नील पर्वत वैडूर्य वर्णका, रुक्मि रजतसम द्युति अभंगा।

शिखरी गिरि सुवर्ण सोहे, भक्तजनोंके सब मन मोहे,
तहाँ कूटोंमें एक सिद्धकूट, प्रति पर्वत पर जान अटूट।

जिनमंदिरकी शोभा अनेरी, चरण कमलमें जाऊं बलिहारी।
सुर किन्नर करे महिमा अपार, प्रभु पद पूजें बहु हर्षधार,
कृपासिंधु करुणा बहु कीजे, भक्तजनोंका तिमिर हरीजे।

❀

卐 जम्बूद्वीप की आरती 卐

(रघुपति राघव राजाराम)

जम्बूद्वीप जिनालय अभिराम, आरती करीए करुं प्रणाम।
मुक्तिदाता नाथ तुम्हीं, मंगल मूरति हो प्रभुजी,
मिथ्यातम का होय विनाश, प्रगटे सम्यक्ज्ञान प्रभात।

छह सरोवरमें कमल खिले श्री ह्रीं आदि देवी निवसे,
तीर्थंकर मातकी सेव करे, पुण्य संचय भक्तिसे करे।

आरती कर ज्ञानज्योति भरूं, आत्मनिधि शिवनारी वरुं,
शाश्वत जिनका पूजन करूं, रत्नमणि दीप आरति करूं।

नित नित मंगलमाल करूं, प्रभुभक्तिमें चित्त धरूं,
भवसागर को पार करूं, रत्नमणिदीप आरती करूं।

(28)

卐 जम्बूद्वीप की आरती 卐

(राग : धन्य धन्य आज घडी)

लाख लाख दीपकोंसे आरती उतारें,
शाश्वत जिन पधारे हैं। (२)

जम्बूद्वीपके सुदर्शन मेरु के, अकृत्रिम जिन मंगलकार है,
सोलह सोलह मंदिरमें प्रभुजी बिराजते. शाश्वत जिन पधारे है।

भद्रशाल वनके चार जिनालय, सौमनस वनके प्रभुवर सोहे,
नंदनवन और पांडुकवनके शाश्वत जिन पधारे है।

पांडुक वनकी पांडुक शीला पर, न्हवन प्रभुका अति अद्भुत है
दिव्य देवालयोंमें दीपकमाल है, शाश्वत जिन पधारे हैं...

कहानगुरुके परम प्रतापसे, जम्बूद्वीप मेरुकी रचना मनोहार है।
भगवती मातका आशीष मंगलकार है, शाश्वत जिन पधारे हैं....

प्रासंगिक भक्तिगीत

(1) देव-गुरु भक्ति गीत

(2) पूज्य सद्गुरुदेव श्री कानजीस्वामी प्रति

(3) प्रशममूर्ति पूज्य बहेनश्री चंपाबेन प्रति

(30)

वीरनिर्वाणोत्सव भक्ति

卐 वीरप्रभु सिद्ध थया छे 卐

(राग–भेटे झूले छे तलवार)

निर्वाणमहोत्सव दिन आज,
वीरप्रभु सिद्ध थया छे;
वीर जिनेश्वर सिद्ध थया छे,
गौतम केवळज्ञान,...वीर० १.

समश्रेणी प्रभु पावापुरीमां,
मुक्तिमां विराज्यां नाथ,...वीर० २.

अनादि देहनो संबंध छूटीने,
चैतन्यगोळो छूट्यो आज,...वीर० ३.

योग-विभावनुं कंपन छूट्युं,
अनंत अकंपता आज,...वीर० ४.

अनंत अनंत गुणपर्याये परिणम्या,
प्रगट्यो अगुरुलघु महान,...वीर० ५.

पुनित पगलां काल हतां भरतमां,
आजे थया चिद्बिंब,...वीर० ६.

काले वीरजी अरिहंत हता,
आजे सिद्ध भगवान,...वीर० ७.

भरतक्षेत्रे पावापुरीमां,
स्मरण वीरनां थाय,...वीर० ८.

देवदेवेंद्रो पावापुरीमां ऊतर्या;
निर्वाणमहोत्सव काज,...वीर० ९.

(31)

विरह पड्या आ भरतक्षेत्रमां,
त्रिलोकीनाथना आज,...वीर० १०.

हे वीर! हे वीर! भरतक्षेत्रमां,
सेवक करे तने साद,...वीर० ११.

सिद्धमंदिरे नाथ बिराज्या,
शासनमां जाग्या कोई संत,..वीर० १२.

साद सांभळ्यो सेवक तणो अे,
जाग्या कुंद-कहान संत,...वीर० १३.

कुंदकुंद-अमृतादि-कहानगुरु पाकिया
शासनना रक्षणहार,...वीर० १४.

कहानगुरुने श्रुतसागर ऊछळ्या,
अमृत वरस्या मेह,....वीर० १५.

आतम-आधार अे अम सेवकना,
शिवपुरनो अे साथ,....वीर० १६.

*

卐 वीर निर्वाण-स्तवन 卐

(राग–आजे पाटणपुरमां)

आजे वीरप्रभुजी निर्वाणपदने पामिया रे,
श्री गौतम गणधरजी पाम्या केवळज्ञान,
सुरनर आवे निर्वाण-कल्याणकने ऊजववा रे. आजे० १.

(साखी)

चरम तीर्थंकर वीरप्रभु, चोवीशमां जिनराय,
भारतना वीतरागजी, विरह पड्या दुःखदाय.

(32)

आजे पावापुरमां समश्रेणी प्रभु आदरी रे,
मुक्तिमां बिराज्या आप प्रभु भगवंत,
अहीं भरतक्षेत्रे तीर्थंकर विरह पड्या रे. आजे० २.

त्रीश वर्षे तप आदर्यां, लीधां केवळज्ञान,
अगणित भव्य उगारीने, पाम्या पद निर्वाण.

प्रभुजी! आपे तो पोतानो स्वारथ साधियो रे,
अम बाळकनी आपे लीधी नहीं संभाळ;
अमने केवळना विरहमां मूकी चालिया रे. आजे० ३.

तोपण तुज शासनमहीं, पाक्यां अमोलख रतन,
कुंदामृत-गुरुकहान छे, शासनधोरी नाथ!

जेणे तुज शासनने अणमूल ओप चडाविया रे,
जे छे अम सेवकना आतम-रक्षणहार,
जेणे भारतना भव्योने चक्षु आपियां रे. आजे० ४.

भरते वीरप्रभुनुं शासन आजे झूली रह्युं रे,
ते छे कहानगुरुनो परम परम प्रताप,
जेणे वीरप्रभुनो मुक्तिमार्ग शोभावियो रे,
जेनी वाणीथी जयकार नादो गाजता रे. आजे० ५.

*

卐 वीरजीनुं शासन झूले रे 卐

वीर प्रभुजी मोक्ष पधार्या, गौतम केवळज्ञान रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. १.

देवदेवेन्द्र महोत्सव करे ज्यां, दिन दिवाळी उजवाय रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. २.

शैलेशीकरणे चड्या प्रभुजी, अयोगीपद धर्युं आज रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. ३.

(33)

सर्व करमनो क्षय करीने, सिद्धपद प्राप्ति थाय रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. ४.

पावापुरी सिद्धक्षेत्र प्रभुजी, समश्रेणी कहेवाय रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. ५.

निर्वाणकल्याणक सुरपति ऊजवे स्वर्गेथी ऊतरी आज रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. ६.

अखंडानंदस्वरुप प्रगटावी पहोंच्या शिवपुरधाम रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. ७.

देवदुंदुभि वाजिंत्र वागे, निर्वाणमहोत्सव थाय रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. ८.

त्रीश वर्ष प्रभु दिव्यध्वनिनो अपूर्व छूट्यो धोध रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. ९.

ध्वनि सुणीने भव्य जीवोनां हृदयपट पलटाय रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. १०.

वीरना वारस कहानगुरुजी वर्तावे जयजयकार रे,
वीरजीनुं शासन झूले रे. ११.

(34)

માગસર વદ ૮-શ્રી કુંદકુંદાચાર્ય આચાર્ય પદવીદિન

卐 આજ મંગળ દિન મહા ઊગીયો 卐

(રાગ : આજ દિવ્યધ્વનિ છૂટી)

આજ મંગળ દિન મહા ઊગીયો રે,
આજે ઘેર ઘેર મંગળમાળ.....
આજ આચાર્યપદ સોહામણાં રે.....
કુંદકુંદ આચાર્ય અહો જાગીયા રે,
ભરતક્ષેત્રનાં અહો ભાગ્ય.....આજ આચાર્યપદ.....૧

પ્રમત્ત અપ્રમત્તે ઝૂલતા રે,
જિનમુદ્રાધારી ભગવંત.....આજ આચાર્યપદ.....૨

દેહ છતાં દેહાતીત દેવ છો રે,
શ્રુત લબ્ધિ તણો નહીં પાર.....આજ આચાર્યપદ.....૩

જ્ઞાન અનેકાન્ત બળવાન છે રે,
શ્રુતકેવળીની છે સાખ.....આજ આચાર્યપદ.....૪

આચાર્યપદે મુનિ કુંદને રે,
સ્થાપે ઇન્દ્ર નરેન્દ્રો આજ.....આજ આચાર્યપદ.....૫

દેવેન્દ્રગણ આજ આવીયા રે,
મનુષ્યજન બહુ ઊભરાય.....આજ આચાર્યપદ.....૬

ચૌદિશમાં વાજાં વાગીયાં રે,
આચાર્યપદદિન આજ.....આજ આચાર્યપદ.....૭

મહાવિદેહક્ષેત્રમાં ચાલીયા રે,
નીહાળ્યા સીમંધરનાથ.....આજ આચાર્યપદ.....૮

दिव्यध्वनिनां सूर सूणीया रे,
ओगाळ्या आतम मोझार.....आज आचार्यपद.....९

जिनदर्शनथी चित्त अति ऊछळ्या रे,
भरते आवीने छूट्या बोध.....आज आचार्यपद....१०

प्रभु थोके थया मुनि अर्जिका रे,
व्रतधारी तणो नहि पार.....आज आचार्यपद.....११

आ भरत तणो अेक थांभलो रे,
संत वडे नभे ब्रह्मांड.....आज आचार्यपद.....१२

कहानदेवे कुंदकुंद ओळख्या रे,
कळियुगे संबोध्या बहु जीव.....आज आचार्यपद.....१३

आत्मयोगी आ जागीयो रे,
आत्मनाद वगाड्या जगमांही.....आज आचार्यपद.....१४

कुंद-कहान वसो मुज अंतरे रे,
झट तारजो तारणहार.....आज आचार्यपद.....१५

(36)

वीरशासन जयंती भक्ति

卐 आज दिव्यध्वनि छूटी 卐

(राग–प्रभु पावन करोने मारुं आंगणुं रे)

आज दिव्यध्वनि छूटी वीरमुखथी रे,
आज ॐध्वनि छूटी वीर मुखथी रे,
अनंत जीवोना तारणहार.....आज॰
सहु महोत्सव करीअे आज.....आज॰ १.

आज इन्द्रोंना टोळां ऊतार्यां रे,
आज भरतक्षेत्रनी मांही.....आज॰ २.

ऋजुवालिकाअे शुक्लध्यान आदर्युं रे,
प्रभु पाम्या छो केवळज्ञान.....आज॰ ३.

प्रभु समोसरण-रचना बनी रे,
भव्यो जुअे ध्वनिनी वाट.....आज॰ ४.

आज पात्र गौतमजी पधारिया रे,
प्रभु दिव्यध्वनिना छूट्या धोध.....आज॰ ५.

विपुलाचले समोसरण जामिया रे,
श्रेणिक-राजानी राजधानी मांही.....आज॰
रुडी राजगृही नगरी मांही.....आज॰ ६.

प्रभु! गगने वाजिंत्रो वागियां रे,
गाज्या त्रण भुवनमां नाद.....आज॰ ७.

आज दिव्यध्वनिना धोध उछळ्या रे,
आज ॐकार नादो गाजिया रे,
जाणे ऊछळ्यो समुद्र अगाध.....आज॰ ८.

(37)

चार तीर्थ ध्वनिरसे तरबोळ थयां रे,
गणधर–मुनि–श्रावकनां थयां वृंद.....आज॰
आतम-आनंदमां नाची ऊठ्या आज.....आज॰ ९.

साक्षात् जिनेन्द्र भरतमां बिराजता रे;
दिव्य ध्वनिनी वर्षा थाय.....आज॰
धन्य धन्य ते दिन ने रात.....आज॰ १०.

वीरपुत्र अेवा कहानगुरु पाकिया रे,
जेणे सुणाव्या ॐनां स्वरूप.....आज॰ ११.

अद्‌भुत रचना रची कहानगुरुअे रे,
खोल्या दिव्यध्वनिनां रहस्य.....आज॰ १२.

देव-गुरुनी सेवा हृदये वसो रे,
वसो वसो प्रभु! अे त्रिकाळ आज॰ १३.

*

卐 वीरजीनी वाणी छूटी रे 卐

वीर सभामां आज गौतम पधार्या, अमृत वरस्या मेह रे;
वीरजीनी वाणी छूटी रे.
वैशाख मासथी वादळ चड्यां, आज आषाढे वरस्यो मेह रे;
वीरजीनी वाणी छूटी रे.....वीरसभामां॰ १.

देव दुंदुभीनाद गगडिया, इन्द्रन्द्रिन्द्राणी हरखाय रे;
वीरजीनी वाणी छूटी रे;
रत्न अमोलख गणधरदेवश्री, शोभाव्यां शासन रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.....वीरसभामां॰ २.

तरस्यां-चातक–देव-मानव-तिर्यंचनी, तात्त्वपिपासा छिपाय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे;

(38)

संसारतापना दुःखदावानळ, अेकीक्षणे बुझाय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.....वीरसभामां॰ ३.

दर्शन-ज्ञान ने चारित्र केरा, मोंघेरा फाल्या फाल रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे;
मोंघो मारग ज्यां मुक्ति तणो त्यां, जीवोनां जूथ ऊभराय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.....वीरसभामां॰ ४.

धन्य नगर, धन्य समवसरण, धन्य धन्य सभा-नरनार रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे;
दिव्यध्वनिना वह्या प्रवाह, अे धन्य दिवस धन्य रात रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.....वीरसभामां॰ ५.

दिव्यध्वनिनी थोडी-शी वानगी, परमागममां जणाय रे;
वीरजीनी वाणी छूटी रे;
धन्य आचार्य, धन्य उपाध्याय, धन्य कृपाळु गुरुराज रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.....वीरसभामां॰ ६.

साक्षात् सुणवा अे दिव्यध्वनिने, मन मारुं तलसाय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.....वीरसभामां. ७.

*

(39)

श्रावण शुक्ला १५-रक्षाबंधन दिन भक्ति

श्री विष्णुकुमार मुनि स्तवन

卐 जय जय मुनिवर विष्णुकुमार 卐

(चाल-मेरे मनमंदिरमें आन)

जय जय मुनिवर विष्णुकुमार, गुरु तुम धर्म के रक्षणहार।

दुष्ट बलिने कुमति उपाई, मुनियों की नर यज्ञ रचाई;
मच गया गजपुर हा हा कार...जय० १

संघ घातकी खबर ये पाकर, पुष्पदंत मुनि अति घबराकर;
आन के आप से करी पुकार...जय० २

तुम हो स्वामी अति बलधारी, तप बल सिद्धि प्राप्त है भारी;
धर्म पै चलता आज कुठार...जय० ३

बौने द्विज का भेष बनाया, चमत्कार तप का दिखलाया;
पड गया बलि नृप चरण मंझार...जय० ४

मुनियों का उपसर्ग हटाया सबको धर्म दया बतलाया;
हुआ जिनधर्म का जय जयकार....जय० ५

क्षमाभाव कर बलि को छोडा, उसने हिंसा से मुख मोडा;
जिनमत धार लिया सुखकार...जय० ६

गजपुर के श्रावक नरनारी कठिन प्रतिज्ञा दिलमें धारी,
कष्ट टरे पर करें अहार...जय० ७

विष्णु मुनि आदर्श हमारे, प्रेम सुपाठ पढावन हारे;
जय बोलो शिवराम पुकार....जय० ८

*

(40)

परमोपकारी पूज्य सद्‌गुरुदेव श्री कानजीस्वामी प्रति

भक्तिगीत

१. विदेहवासी कहानगुरु

विदेहवासी कहानगुरु भरते पधार्या रे,
सुवर्णपुरीमां नित्ये चैतन्यरस वरस्या रे;
उजमबाना नंद अहो! आंगणे पधार्या रे;
अम अंतरियामां हर्ष ऊभराया रे.

आवो पधारो मारा सद्‌गुरुदेवा;
शी शी करुं तुज चरणोंनी सेवा.

विधविध रत्नोना थाळ भरावुं रे,
विधविध भक्तिथी गुरुने वधावुं रे.....विदेह० १.

दिव्य अचरजकारी गुरु अहो! जाग्या;
प्रभावशाळी सन्त अजोड पधार्या.

वाणीनी बंसरीथी ब्रह्माण्ड डोले रे,
गुरु-गुणगीतो गगनमांही गाजे रे.....विदेह० २.

श्रुतावतारी अहो! गुरुजी अमारा;
अगणित जीवोनां अंतर उजाळ्यां.

सत्य धरमना आंबा रूडा रोप्या रे,
सातिशय गुणधारी गुरु गुणवन्ता रे.....विदेह० ३.

कामधेनु कल्पवृक्ष अहो! फळियां;
भावि तणा भगवंत मुज मळिया.

अनुपम धर्मधोरी गुरु भगवंता रे,
निशदिन होजो तुज चरणोनी सेवा रे.....विदेह० ४.

*

२. आजे भरतभूमिमां....

(राग : मारा मन्दिरियामां त्रिशलानंद)

आजे भरतभूमिमां सोना-सूरज ऊगियो रे;
मारा अंतरिये आनन्द अहो! ऊभराय,
शासन-उद्धारक गुरु जन्मदिवस छे आजनो रे;
गुरुवर-गुणमहिमाने गगने देवो गाय,
विधविध रतनोथी वधावुं हुं गुरुराजने रे. आजे० १.

(साखी)

उमराळामां जनमिया ऊजमबा-कूख-नन्द;
कहान तारुं नाम छे, जग-उपकारी सन्त.

मात-पिता-कुळ-जात सुधन्य अहो! गुरुराजनां रे;
जेने आंगण जन्म्या परमप्रतापी कहान,
जेने पारणियेथी लगनी निज कल्याणनी रे. आजे० २.

(साखी)

'शिवरमणी रमनार तुं, तुं ही देवनो देव';
जाग्या आत्मशक्तिना भणकारा स्वयमेव.

परमप्रतापी गुरुअे अपूर्व सतने शोधियुं रे;
भगवंत्कुन्दकुन्दऋषीश्वर चरण-उपासक सन्त,
अद्भुत धर्मधुरन्धर धोरी भरते जागिया रे. आजे० ३.

(साखी)

वैरागी धीरवीर ने अंतरमांही उदास;
त्याग ग्रह्यो निर्वेदथी, तजी तनडानी आश.

वंदुं सत्य-गवेषक गुणवन्ता गुरुराजने रे;
जेने अंतर उलस्यां आत्म तणां निधान,
अनुपम ज्ञान तणा अवतार पधार्या आंगणे रे. आजे० ४.

(42)

(साखी)

ज्ञानभानु प्रकाशियो, झळक्यो भरत मोझार;
सागर अनुभवज्ञाननो रेलाव्यो गुरुराज.

महिमा तुज गुणनो हुं शुं कहुं मुखथी साहिबा रे;
दुःषमकाळे वरस्यो अमृतनो वरसाद,
जयजयकार जगतमां कूहानगुरुनो गाजतो रे. आजे० ५.

(साखी)

अध्यातमना राजवी, तारणतरण जहाज;
शिवमारगने साधीने कीधां आतमकाज.

तारा जन्मे तो हलाव्युं आखा हिन्दने रे;
पंचमकाळे तारो अजोड छे अवतार,
सारा भरते महिमा अखंड तुज व्यापी रह्यो रे. आजे० ६.

(साखी)

सद्दृष्टि, स्वानुभूति, परिणति मंगलकार;
सत्यपंथ प्रकाशता, वाणी अमीरसधार.

गुरुवर-वदनकमळथी चैतन्यरस वरसी रह्या रे;
जेमां छाई रह्या छे मुक्ति केरा मार्ग,
अेवी दिव्य विभूति गुरुजी अहो! अम आंगणे रे. आजे० ७.

(साखी)

शासननायक वीरना नन्दन रूडा कूहान;
ऊछळ्या सागर श्रुतना, गुरु-आतम मोझार.

पूर्वे सीमंधरजिन-भक्त सुमंगल राजवी रे;
भरते ज्ञानी अलौकिक गुणधारी भडवीर,
शासन-संतशिरोमणि स्वर्णपुरे बिराजता रे. आजे० ८.

(साखी)

सेवा पदपंकज तणी नित्य चहुं गुरुराज!
तारी शीतळ छांयमां करीअे आतमकाज.

तारा जन्मे गगने देवदुंदुभि वागियां रे;
तारा गुणगणनो महिमा छे अपरंपार,
गुरुजी रत्नचिंतामणि शिवसुखना दातार छो रे;
तारां पुनित चरणथी अवनी आजे शोभती रे. आजे० ६.

*

३. स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे

(राग : सीमंधरमुखथी फूलडां खरे)

उमराळा धाममां रत्नोनी वर्षा,
जन्म्या तारणहार रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
ऊजमबा-माताना नंदन आनंदकंद,
शीतळ पूनमनो चंद रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. १.

मोतीचंदभाईना लाडीला सुत अहो!
धन्य माता-कुळ-ग्राम रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
दुषम काळे अहो! कूहान पधार्या,
साधकने आव्या सुकाळ रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. २.

विदेहमां जिन-समवसरणना
श्रोता सुभक्त युवराज रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
भरते श्रीकुंदकुंद-मार्ग-प्रभावक
अध्यात्मसंत शिरताज रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. ३.

(44)

वरस्यां कृपामृत सीमंधरमुखथी,
युवराज कीधा निहाल रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
त्रिकाळ–मंगळ–द्रव्य गुरुजी,
मंगळमूर्ति महान रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. ४.

आत्मा सुमंगळ, दृगज्ञान मंगळ,
गुणगण मंगळमाळ रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे,
स्वाध्याय मंगळ, ध्यान अति मंगळ,
लगनी मंगळ दिनरात रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. ५.

स्वानुभवमुद्रित वाणी सुमंगळ,
मंगळ मधुर रणकार रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे.
ब्रह्म अति मंगळ, वैराग्य मंगळ,
मंगळ मंगळ सर्वांग रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. ६.

ज्ञायक–आलंबन मंत्र भणावी,
खोल्यां मंगळमय द्वार रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
आतमसाक्षातकार–ज्योति जगावी,
उजाळ्यो जिनवरमार्ग रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. ७.

परमागमसारभूत स्वानुभूतिनो
युग सर्ज्यो उजमाळ रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;

(45)

द्रव्यस्वतंत्रता, ज्ञायकविशुद्धता
विश्वे गजावनहार रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. ८.

सारा भारतमां अमृत वरस्यां,
फाल्या अध्यातम–फाल रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
श्रुतलब्धि–महासागर ऊछळ्यो.
वाणी वरसे अमीधार रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. ९.

नगर नगर भव्य जिनालयो ने
बिंबोत्सव उजवाय रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
कूहानचरणथी सुवर्णपुरनो
उज्ज्वळ बन्यो इतिहास रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. १०.

'भगवान छो' सिंहनादोथी गाजतुं
सुवर्णपुर तीर्थधाम रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
रत्नचिंतामणि गुरुवर मळिया,
सिद्धयां मनवांछित काज रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. ११.

अनंत महिमावंत गुरुराजने
रत्ने वधावुं भरी थाळ रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे;
पावन अे सन्तनां पादारविंदमां
होजो निरंतर वास रे,
स्वर्णभानु भरते ऊग्यो रे. १२

*

४. कहानगुरु-स्तुति

(राग : धर्मध्वज फरके छे)

कहानगुरु बिराजो मनमंदिरिये;
आवो आवो पधारो अम आंगणिये;
कल्पवृक्ष फळ्यां अम आंगणिये.

शी शी करुं तुज पूजना, शी शी करुं तुज वंदना;
गुरुजी पधार्या आंगणे, अम हृदय उलसित थई रह्यां.
पंचम काळे पधार्या गुरु तारणहार;
स्वर्णे बिराज्या सत्य-प्रकाशनहार.....कहानगुरु० १.

दिव्य तारुं द्रव्य छे ने दिव्य तारुं ज्ञान छे;
दिव्य तारी वाणी छे ने अम जीवन-आधार छे.
चैतन्यदेव प्रकाश्या गुरु-अंतरमां;
अमृतधारा वरसी सारा भारतमां.....कहानगुरु० २.

सूर्य-चंद्रो गगनमां गुणगान तुज करता अहो!
महिमाभर्या गुरुदेव छो, शासन तणा शणगार छो.
नित्ये शुद्धातमदेव-आराधनहार;
ज्ञायकदेवना साचा स्थापनहार.....कहानगुरु० ३.

श्रुत तणा अवतार छो, भारत तणा भगवंत छो;
अध्यातममूर्ति देव छो, ने जगत-तारणहार छो.
सूक्ष्म तत्त्वना भावो जाणनहार;
मुक्तिपंथना साचा प्रकाशनहार.....कहानगुरु० ४.

भरी रत्नना थाळो वधावुं भावथी गुरुराजने;
भगवंत भाविना पधार्या, सेवक तारणहार छे.
कृपानाथने अन्तरनी अरदास,
गुरुचरणोमां नित्ये होजो निवास.....कहानगुरु० ५.

*

(47)

५. धन्य-धन्य दिन आज है

धन्य-धन्य दिन आज है, मंगलमय सुप्रभात है,
उजमबाके राजदुलारेका मंगल अवतार हैः
धन्य-धन्य०

उमरालाके द्वार द्वार पर बाज रही शहनाइयां,
'मोती' राजा 'उजमबा' घर मंगल गीत बधाइयां;
सुर-नर-नारी सब मिल मंगल जन्मोत्सवको मना रहे,
बालसुलभ लीलासे देखो सब चितमें हरियालियां;
पूर्णचन्द्र सम मुखडा तेरा जग-आकर्षणहार है,
सूर्यप्रभासे भी अधिका यह अनुपम तव देदार है ।
धन्य-धन्य० १

दिव्य विभूति कहानगुरुजी सिंहकेसरी हैं जागे,
धर्मचक्रीकी अमर पताका देशोदेशमें फहराये;
ओ पुराण पुरुषोत्तम तू सर्वांग सुमंगलकार है,
तुझ दर्शनसे भारतवासी भाग्यशाली हैं कहलाये;
तीर्थ समा पावन मन है, खिला हुआ नन्दनवन है,
कल्याणी चिन्मूर्ति पर यह न्योच्छावर सब जगजन है ।
धन्य-धन्य० २

चैतन्यप्रभुका अजब-गजबका रंग गुरुमें छाया है,
और उसे ही भक्तोंके अन्तस्तलमें फैलाया है,
स्वानुभूतियुगस्रष्टा तेरी धवलकीर्ति दशदिशव्यापी,
साधकका विश्राम गुरु मंगल तीरथ कहलाया है;
वाणी अमृत-घोली है, सारी दुनियां डोली है,
वीतरागके गुप्त हृदयकी अन्तर्ग्रन्थि खोली है ।
धन्य-धन्य० ३

(48)

जनम-जनमका अंत करे तू ऐसा महिमावंत है,
करुणामय वात्सल्यमूर्ति गुरु अद्भुत शक्तिवंत हैं;
कल्पवृक्ष सम वांछितदाता, भारत-भाग्यविधाता है,
तुझ मंगल छायामें जगमें जिनशासन जयवंत है;
ज्ञान और वैराग्य-भक्तिका संगम मंगलकार है,
कहान-गुरुवर शाश्वत चमको, वन्दन वारंवार है ।
धन्य-धन्य० ४

गुणमूर्ति सीमंधरनन्दन स्वर्णपुरी-शणगार हैं,
जीवनशिल्पी नाथ अहो आत्मार्थीके आधार हैं;
दुषमकालमें मुक्तिदूत, भविभक्तोंको वरदान है,
तेरी स्वर्णिम गुणगणगाथा भवदधितारणहार है;
शाश्वत शरण तुम्हारा हो, चाहें जगत किनारा हो,
भवभवमें तुझ दास रहें, बस तू आदर्श हमारा हो;
धन्य-धन्य दिन आज है, मंगलमय सुप्रभात है,
उजमबाके राजदुलारेका मंगल अवतार है । ५

६. गुरु-जन्मजयंती

गुरु-जन्मजयंती आजे छे,
गुरुराजनी जयंती आजे छे;
अेना शब्द गगनमां गाजे छे....गुरु-जन्म० १.

वीरमार्गप्रवर्तक भरते गाजे छे,
धर्मध्वजनो डंको बजावे छे;
शासन उन्नति आजे छे....गुरु-जन्म० २.

मुमुक्षु हृदयो उल्लसे छे,
आजे अमृतवर्षा वर्षे छे;
जैन शासननो जयकार गाजे छे....गुरु-जन्म ३.

आजे स्वर्गेथी भक्त देवो आवे छे,
आवी भक्तिनी धून मचावे छे;
गुरुराजनो जयकार गजावे छे....गुरु-जन्म० ४.

वृक्षो ने वेलडियो नाचे छे,
फळ फूल आजे पाय लागे छे;
गुरुभक्तिमां सहकार आपे छे....गुरु-जन्म० ५.

अजोड संतनी वधाई वागे छे,
केसरी सिंहनी वधाई वागे छे;
अे तो गुणमां वधतो गाजे छे....गुरु-जन्म० ६.

दिव्यध्वनिनां रहस्यो जेणे खोल्यां छे,
शास्त्रना ऊंडा मर्म ऊकेल्या छे;
अे तो जगना तारणहार जाग्या छे...गुरु-जन्म० ७.

प्रभु सेवक लळी पाय लागे छे,
आत्मलाभनी वधाई आजे वागे छे;
कृपानाथ कृपा वरसावे छे....गुरु-जन्म० ८.

*

७. गुरु-जन्मवधामणां

वैशाख सुद बीजने वार,
उजमबा घेर कहान पधार्या;
(–आज गुरुजन्मवधामणां);
गर्ज्या दुंदुभिना नाद,
उमराळा गामे कहान पधार्या. १.

न माय आनंद कुटुंबीजन हैये,
भाग्यवान मोतीचंदभाई....उजमबा०;
कहानकुंवरनो जन्म ज थातां,
गंधोदक वृष्टि थाय....उजमबा० २.

कहानकुंवरनो जन्म ज थातां,
मनवांछित कुदरत थाय....उजमबा०;
कहान जनमतां भरतखंड डोल्युं,
जनम्या अनुपम कहान....उजमबा० ३.

मोतीचंदभाईने घेर नृत्य आज थाय छे,
घेर घेर मंगळ थाय....उजमबा०;
देवदेवेन्द्रो मंगळ आज गाय छे,
भरतखंडमां डंका थाय....उजमबा० ४.

बाळ कुंवर कहान अे जुदा हतां कोई,
खेलता'ता ज्ञानकुंज मांही....उजमबा०;
वीत्या वीत्या ते कांई बाळकाळ वीत्या,
लागी धून आतमानी मांही..उजमबा० ५.

वैरागी कहाने त्याग ज लीधो,
काढ्युं अलौकिक कांई.....उजमबा०;
कहानगुरुअे बंसरी बजावी,
मीठा अे बंसरीना सूर....उजमबा० ६.

मीठा आ सूर अहीं आव्या छे क्यांथी,
जाग्यो छे अेक कोई संत....उजमबा०;
चालो सहु अे सुणवा जईअे,
मीठा आ बंसरीना सूर....उजमबा० ७.

अबधूत अलख जगाडनार संत आ,
देवोने आश्चर्य थाय....उजमबा०;
अध्यातमरसनो रसीलो संत आ,
श्रुतसागर ऊछळ्या महान....उजमबा० ८.

पाक्या छे युगप्रधानी संत आ,
सेवकने हरख न माय....उजमबा०;
अेवा संतनी चरणसेवाथी,
भवना आवे छे अंत..... उजमबा०;
पंचमकाळे अहोभाग्य खील्यां छे,
वंदन होजो अनंत.....उजमबा० ९.

*

८. गुरु-जन्मवधाई

आज मंगळ वधाई वागती रे,
कहान कुंवर जन्म्या अहो आज,
आज गुरुजी पधार्या भरतमां रे....आज० १.

धन्य धन्य उमराळा गामने रे,
धन्य धन्य उजमबा मात;....आज० २.

धन्य माता पिता कुळ जातने रे,
जेने आंगण जन्म्या बाळ कहान;....आज० ३.

आज तेज थयां जन्मधाममां रे,
अेना भरतखंडमां प्रकाश;....आज० ४.

(52)

आज आनंद मंगळ घेर घेर थयां रे,
ठेर ठेर अहो! लीला लहेर;....आज० ५.

बाळकुंवर कहान अे लाडिला रे,
मात पूरे कुंवरना कोड;....आज० ६.

प्रभु पारणेथी आतमनाद गाजता रे,
अेनी मुद्रा अहो अद्‌भुत;....आज० ७.

कुंवर कहाने अपूर्व सत् शोधियुं रे,
अेना वैराग्य तणो नहिं पार;....आज० ८.

अेणे त्याग कर्यो संसारनो रे,
प्रकाश्या मुक्ति केरा पंथ;....आज० ९.

कहानगुरुअे हलाव्या हिंदने रे,
अहो! मलाव्यो ज्ञायकदेव;....आज० १०.

धर्मचक्री भरतमां ऊतर्या रे,
अहो धर्मावतारी पुरुष;....आज० ११.

ज्ञान-अवतारी अहो आविया रे,
पधार्या सीमंधरसुत;....आज० १२.

कहान गुरुजीना जन्म अे मीठडा रे,
अेना मीठा वाणीना सूर;....आज० १३.

गुरुदेवना गुणने शुं कथुं रे,
प्रभु सेवक तणा शणगार;....आज० १४.

*

૯. माताने स्वप्नां लाध्यां ने.....

माताने स्वप्नां लाध्यां ने झबकीने जाग्यां उजमबा,
स्वप्नां अे मीठडां लाग्यां ने दुंदुभि वाग्या उजमबा. १.

जोयुं हृदयमां जागी ने नींदडी त्यागी उजमबा,
कूखे आव्या छे बडभागी ने भावठ भांगी उजमबा. २.

माताने उछरंग आव्यो ने संदेशो सुणाव्यो उजमबा,
मातपिताने हर्ष न मायो, जोषीने तेडाव्यो उजमबा. ३.

जोषीअे जोष अेम जोया ने मनडां मोह्यां उजमबा;
कां कोई नगरीनो राया के जग-तारणहारो उजमबा. ४.

मीठडां फळ अेम सुण्यां ने उछरंग आव्या उजमबा;
परम पुरुष अे जन्म्या ने तेज उभराणां उजमबा. ५.

तेज देखीने मात मोह्यां ने 'कहान' नाम राख्या उजमबा;
मातने कानुडा पयारा के अजब बाळलीला उजमबा. ६.

कहाने अेवी बंसरी बजावी रे आतमनाद गजाव्या उजमबा;
थयो धर्म-धुरंधर धोरी के जग–तारणहारो उजमबा. ७.

*

१०. सुवर्णपुरे वस्या अेक संत

(राग : भेटे झूले छे तलवार)

सुवर्णपुरे वस्या अेक संत,
जन्म्या भव्योने तारवा;
जेनां पगलांथी कणकण पावन,
बन्युं सुवर्ण तीर्थधाम, जन्म्या०
अपूर्व अलख कोई अेणे जगाड्यो,
जगाड्या अनेक भव्य जीव, जन्म्या० १.

(54)

सोळ कळाओ ज्ञानसूर्य प्रकाश्यो,
प्रकाश्यो चैतन्यराज, जन्या०
जेनी मुद्रामां शांतरस छवाणा,
वाणीमां अमीरस धार, जन्या० २.
अंतरपटमां गूढता भरी छे,
कळवी महा मुश्केल, जन्या०
अंतरहृदयमां करुणानो पिंड छे,
दृढताने नहि पार. जन्या० ३.
दर्शनथी सत् रुचि जागे छे,
वाणीथी अंतर पलटाय; जन्या०
सद्गुरुदेवा अमृत पीरसता,
सेवक वारी वारी जाय. जन्या० ४.
सिंहकेसरीना सिंहनादेंथी,
हलाव्युं छे आखुं हिंद, जन्या०
सुवर्णपुरीमां नित्य नित्य गाजता,
आतम-बंसी केरा सुर. जन्या० ५.
ज्ञाता-अकर्तानुं स्वरुप समजावे,
स्वपरनो बतावे भेद, जन्या०
कल्पवृक्ष अम आंगणे फळियुं,
मनवांछित दातार. जन्या० ६.
श्री गुरुदेवनी चरणसेवाथी,
भवना आवे छे अंत, जन्या०
तन-मन-धन प्रभु चरणे अर्पु;
तोये पूरुं नव थाय, जन्या० ७.

११. अध्यातमरसना राजवी कहानगुरु

शासन तणा शिरोमणि स्तवना करुं 'गुरु कहान'नी;
तुज दिव्य मूर्ति झळहळे, अध्यातमरसना राजवी. १.

अध्यातम-कल्पवृक्षनां फळनो रसीलो तुं थयो;
तुं शीघ्र रससाधक बन्यो, अंतर तणी सृष्टि लह्यो. २.

तुं लोकसंज्ञा जीतीने, अलमस्त थई जगमां फर्यो;
परमात्मनुं ध्यान ज धरी, तुज आत्मने स्वच्छ ज कर्यो. ३.

प्रतिबंध टाळी लोकनो, आनंदनी मोजे रह्यो;
तें शुद्ध चेतन धर्मनो अनुभव हृदयमांही लह्यो. ४.

अंतर तणा आनंदमां सुरता लगावी प्रेमथी;
शुभ द्रव्यभावे तप तपेथी शुद्धि करी शुभ नेमथी. ५.

निंदा करी ना कोईनी, निंदा करी सहु तें सही;
शुद्ध-आत्मरस-भोगी भ्रमर, शुभदृष्टि तारामां रही. ६.

औदार्यने तें आदरी जगमां जणाव्युं बोलथी;
आचारमां मूकी घणुं जोयुं अनुभव तोलथी. ७.

तारा हृदयनी गूढता त्यां मूढ जननी मूढता;
जे आत्मयोगी होय ते जाणे खरे तव शुद्धता. ८.

पहोंच्यो अने पहोंचाडतो तुं लोकने शुद्ध भावमां;
अध्यातमरसिया जे थया, बेठा खरे शुद्ध नावमां. ९.

दुनिया थकी डरतो नथी, आशा नथी ममता जरी;
ज्यां हुं वसुं त्यां तुं नहीं, अे भावना विलसे खरी. १०.

स्याद्वाद पारावार छे, आनंद अपरंपार छे;
साचा हृदयनो संत छे, परवा नथी जयकार छे. ११.

आशा नथी कीर्ति तणी, अपकीर्तिने गणतो नथी;
लोको मने अे शुं कहे त्यां लक्षने देतो नथी. १२.

व्यवहारना भेदो घणा त्यां क्लेशने करतो नथी;
लागी लगनवा आत्मनी, बीजुं कशुं जोतो नथी. १३.

तें भावसंयम बोटमां बेसी प्रयाण ज आदर्युं;
भवपथ-उदधि तरवा विशे तें लक्ष अंतरमां धर्युं. १४.

जे जे भर्युं तुज चित्तमां, ते बाह्यमां देखाय छे;
अध्यात्मरसरसिया जनोथी तुज हृदय परखाय छे. १५.

अेकांतथी अध्यात्ममां जे शुष्क थईने चालतो,
चाबुक तेने मारीने व्यवहारमांही वाळतो. १६.

*

१२. सुखशांतिप्रदाता

सुखशांतिप्रदाता, जगना त्राता, कहानगुरु महाराज;
जनभ्रांतिविधाता, तत्त्वोना ज्ञाता, नमन करुं छुं आज....१.

जडतानो आ धरणी उपर, हतो प्रबळ अधिकार;
कर्यो उपकार अपार प्रभु! तें, प्रकाश्या शास्त्र उदार रे...सुख० २.

वरसावी निज वचनसुधारस, कर्यो सुशीतल लोक;
समयसारनुं पान करीने, गयो मानसिक शोक रे...सुख० ३.

गुरुवाणीनुं मनन करीने, पामुं अलौकिक भान;
क्षणे क्षणे हुं ज्ञायक समरुं, पामुं केवळज्ञान रे...सुख० ४.

तारुं हृदय गुरु! ज्ञान-समतानुं, रह्युं निरंतर धाम;
उपकारोनी विमल यादीमां, लाखो वार प्रणाम रे...सुख० ५.

*

१३. तुज पादपंकज ज्यां थयां....

तुज पादपंकज ज्यां थयां ते देशने पण धन्य छे;
अे गाम–पुरने धन्य छे, अे मात कुळ ज वन्द्य छे. १.
तारां कर्यां दर्शन अरे! ते लोक पण कृतपुण्य छे;
तुज पादथी स्पर्शाई अेवी धूलिने पण धन्य छे. २.
तारी मति, तारी गति, चारित्र लोकातीत छे;
आदर्श साधक तुं थयो, वैराग्य वचनातीत छे. ३.
वैराग्यमूर्ति, शांतमुद्रा, ज्ञाननो अवतार तुं;
ओ देवना देवेन्द्र वहाला! गुण तारा शुं कथुं? ४.
अनुभव महीं आनंदतो सापेक्ष दृष्टि तुं धरे;
दुनिया विचारी बावरी तुज दिल देखे क्यां अरे? ५.
तारा हृदयना तारमां रणकार प्रभुना नामना;
अे नाम 'सोहं' नामनुं, भाषा परा ज्यां काम ना. ६.
अध्यातमनी वार्ता करे, अध्यातमनी दृष्टि धरे;
निजदेह–अणुअणुमां अहो! अध्यातमरस भावे भरे. ७.
अध्यातममां तन्मय बनी अध्यात्मने फेलावतो;
काया अने वाणी–हृदय अध्यात्ममां रेलावतो. ८.
ज्यां ज्यां तमारी दृष्टि त्यां आनंदना ऊभरा वहे;
छाया छवाये शांतिनी, तुं शांतमूर्ते! ज्यां रहे. ९.
अध्यात्ममूर्ति, शांतमुद्रा, ज्ञाननो अवतार तुं;
ओ कहानदेव देवेन्द्र वहाला! गुण तारा शुं कथुं? १०.
पावन-मधुर-अद्‌भुत अहो! तुज वदनथी अमृत झर्यां;
श्रवणो मळ्यां सद्‌भाग्यथी, नित्ये अहो! चिद्‌रसभर्यां. ११.
गुरुकूहान तारणहारथी आतमार्थी भवसागर तर्या;
भव भव रहो अम आतमने सांनिध्य आवा संतनां. १२.

*

१४. कहानगुरुने वंदन

कहानगुरु! तुज पुनित चरण वंदन करुं.

उन्नत गिरिशृंगोना वसनारा तमे,
(सीमंधर–गणधरना सत्संगी तमे,)
आव्या रंकघरे शो पुण्यप्रभाव जो;
अर्पणता पूरी कव अमने आवडे,
क्यारे लईशुं उर–करुणानो लाभ जो.....कहानगुरु०

सत्यामृत वरसाव्यां आ काळे तमे,
आशय अतिशय ऊँडा ने गंभीर जो;
नंदनवन सम शीतळ छांय प्रसारता,
ज्ञानप्रभाकर प्रगटी ज्योत अपार जो.....कहानगुरु०

अणमूला सुतनु ओ! शासनदेवीना,
आत्मार्थीनी अेक अनुपम आंख जो;
संत सलूणा! कल्पवृक्ष! चिंतामणि!
पंचम काळे दुर्लभ तव दिदार जो.....कहानगुरु०

सीमंधर–गणधरना सत्संगी तमे,
आव्या रंकघरे शो पुण्यप्रभाव जो;
अर्पणता पूरी नव अमने आवडी,
लेश न लीधो उर करुणानो लाभ जो;
कहानगुरु ओ वहाला! पुनः पधारजो. (२)

*

१५. संदेश देजे गुरुदेवने

प्रशममूर्ति भगवती पूज्य बहेनश्री चंपाबेनना भक्तिपूर्ण हृदयमांथी वहेलुं

(राग–अपूर्व अवसर अेवो...)

चांदलिया! संदेश देजे गुरुदेवने,
(शशियर! संदेशो देजे गुरुदेवने,)
वसी रह्या छे स्वर्गपुरीने धाम जो;
वैमानिक स्वर्गे मुज गुरुजी बिराजता,
इन्द्र सरीखा शोभी रह्या अे देव जो....चांदलिया! १.

विदेहमां स्वर्गेथी गुरुजी पधारतां,
सीमंधरदर्शनथी तृप्ति अपार जो;
वैमानिक-परिषदमां गुरुवर-बेसणां;
भावभीना झीले ध्वनि अमृतधार जो....चांदलिया! २.

स्वर्णपुरीनां धामो आ सूनां थयां,
भरतक्षेत्रने छोडी चाल्या नाथ जो;
(स्वर्णपुरीने छोडी चाल्या नाथ जो;)
तुज विरहे हृदयो भक्तोनां रडी रह्युं,
टळवळता ज्यम मातविहूणां बाळ जो....चांदलिया! ३.

विदेहक्षेत्रे गुरुजी जेम पधारताँ,
तेम पधारो स्वर्णपुरी मोझार जो;
स्वर्णपुरे भक्तो तुज दर्शन झंखता,
दर्शन दो, वाणी वरसावो, नाथ! जो....चांदलिया! ४.

तुज चरणोमां मनडुं मुज लागी रह्युं,
अंतरमांही लाग्यो रंग मजीठ जो;
तुज दर्शननी सेवकने नित झंखना,
श्रवण करावो चिद्रसझरता नाद जो....चांदलिया! ५.

विमानवासी, दिव्य शक्तिधर देव छो,
विधविध कार्ये समर्थ छो गुरुदेव! जो;
आशा पूर्ण करोने गुरुजी! दासनी,
स्वर्णे पधारी वर्तावो जयकार जो,
(आनंदमंगळ वर्तावो गुरुराज! जो.)....चांदलिया! ६.

भरते अेक अजोड रतन गुरुजी! तमे,
अंतर ऊछळ्यां श्रुतसागरनां पूर जो;
स्वर्णे नित गुरुमुखथी अमीवर्षा थती,
पंचम काळे पराक्रमी भडवीर जो....चांदलिया! ७.

गुणमूर्ति अद्‌भुत श्रुतधर गुरुदेव! छो,
चिंतामणि सम चिंतित फळ दातार जो;
मंगळतामय शीतळ तारी छांयडी,
सत्य धरमना आंबा रोप्या नाथ! जो....चांदलिया! ८.

गुरुजी! तारा पड्या विरह वसमा घणा,
तारणहार थया नयनोथी दूर जो;
सेवकने छोडी गुरुजी चाल्या गया,
अंतरमां तो नित्य बिराजो नाथ! जो....चांदलिया! ९.

भवभवमां हो तुज चरणोनी सेवना,
अनंत-उपकारी भावी भगवंत जो;
शुद्धात्माना शरणे साधी साधना,
नित्ये रहेशुं देव-गुरुनी साथ जो....चांदलिया! १०.

*

(61)

पूज्य बहिनश्री चंपाबेनके प्रति

भक्तिगीत

१. सखी देख्युं कौतुक आज

[राग :—आवो आवो सीमंधरनाथ]

सखी! देख्युं कौतुक आज माता 'तेज' घरे;
एक आव्या विदेही महेमान, नीरखी नेन ठरे,
विदेही विभूति महान भरते पाय धरे;
मा 'तेज' तणे दरबार 'चंपा' पुष्प खीले....सखी० १.

शी बाळलीला निर्दोष, सौनां चित्त हरे;
शा मीठा कुंवरीबोल, मुखथी फूल झरे.
शी मुद्रा चंद्रनी धार, अमृत—निर्झरणी;
उर सौम्य सरल सुविशाळ, नेनन भयहरणी....सखी० २.

करी बाळवये बहु जोर, आतमध्यान धर्युं;
सांधी आराधनदोर, सम्यक् तत्त्व लह्युं.
मीठी मीठी विदेहनी वात तारे उर भरी;
अम आत्म उजाळनहार, धर्मप्रकाशकरी....सखी० ३.

सीमंधर–गणधर–संतना, तमे सत्संगी;
अम पामर तारण काज पधार्या करुणांगी.
तुज ज्ञान-ध्याननो रंग अम आदर्श रहो;
हो शिवपद तक तुज संग, माता! हाथ ग्रहो....सखी० ४.

*

२. जन्म वधामणां

[राग :—पुरनो मोरलो हो राज]

जन्मवधामणां हो राज! हैडां थनगन थनगन नाचे;
जन्म्यां कुंवरी चंद्रनी धार, मुखडां अमीरस अमीरस सींचे.

(साखी)

कुंवरी पोढे पारणे, जाणे उपशमकंद;
सीमंधरना सोणले मंद हसे मुखचंद.

हेते हींचोळतां हो राज! माता मधुर मधुर मुख मलके;
खेले खेलतां हो राज! भावो सरल सरल उर झळके....जन्म०

(साखी)

बाळावयथी प्रौढता, वैरागी गुणवंत;
मेरु सम पुरुषार्थथी देख्यो भवनो अंत.

हैयुं भावभीनुं हो राज! हरदम 'चेतन' 'चेतन' धबके;
निर्मळ नेनमां हो राज! ज्योति चमक चमक अति चमके....जन्म०

(साखी)

रिद्धिसिद्धि–निधान छे गंभीर चित्त उदार;
भव्यो पर आ काळमां अद्‌भुत तुज उपकार.

चंपो म्होरियो हो राज! जगमां मघमघ मघमघ म्हेके;
'चंपा'–पुष्पनी सुवास, अम उर मघमघ मघमघ म्हेके....जन्म०

*

३. भव्योनां दिलमां दीवडा प्रगटावनार

[राग :+सोहागमूर्ति शी रे के]

जन्मवधाईना रे के, सूर मधुर गाजे साहेलडी,
तेजबाने मंदिरे रे के चोघडियां वागे साहेलडी;
कुंवरीना दर्शने रे के नरनारी हरखे साहेलडी,
वीरपुरी धाममां रे के कुमकुम वरसे साहेलडी.

(ज्ञानवधाईना रे के, सूर मधुर गाजे साहेलडी,
स्वानुभूति-मंदिरे रे के चोघडियां वागे साहेलडी;
बेनीबानां दर्शने रे के नरनारी हरखे साहेलडी,
वांकानेर धाममां रे के कुमकुम वरसे साहेलडी.)

(साखी)

सीमंधर–दरबारना, ब्रह्मचारी भडवीर;
भरते भाळ्या भाग्यथी, अतिशय गुणगंभीर.

नयनोना तेजथी रे के सूर्यतेज लाजे साहेलडी,
शीतळता चंद्रनी रे के मुखडे विराजे साहेलडी;
उरनी उदारता रे के सागरना तोले साहेलडी,
फूलनी सुवासता रे के बेनीबाना बोले साहेलडी....जन्म०

(साखी)

ज्ञानानंदस्वभावमां, बाळवये करी जोर;
पूर्वाराधित ज्ञाननो, सांध्यो मंगल दोर.

ज्ञायकना बागमां रे के बेनीबा खेले साहेलडी,
दिव्य मति-श्रुतनां रे के ज्ञान चड्यां हेले साहेलडी;
ज्ञायकनी उग्रता रे के नित्य वृद्धि पामे साहेलडी,
आनंदधाममां रे के शीघ्र शीघ्र जामे साहेलडी....जन्म०

(साखी)

समवसरण–जिनवर तणो, दीधो दृष्ट चितार;
उरमां अमृत सींचीने, कर्यो परम उपकार.

सीमंधर–कुंदनी रे के वात मीठी लागे साहेलडी,
अंतरना भावमां रे के उज्ज्वळता जागे साहेलडी;
खम्मा मुज मातने रे के अंतर उजाळ्यां साहेलडी,
भव्योना दिलमां रे के दीवडा जगाव्या साहेलडी....जन्म०

*

४. आवी श्रावणनी बीजलडी

[राग :–रूपला रातलडीमां]

आवी श्रावणनी बीजलडी आनंददायिनी हो बेन,
–सुमंगलमालिनी हो बेन!
जन्म्यां कुंवरी माता–'तेज'–घरे महा पावनी हो बेन,
–परम कल्याणिनी हो बेन!
ऊतरी शीतळतानी देवी शशी मुख धारती हो बेन,
–नयनयुग ठारती हो बेन!
निर्मळ आंखलडी सूक्ष्म–सुमति–प्रतिभासिनी हो बेन,
–अचल तेजस्विनी हो बेन!

(आवी फाल्गुन कृष्णा दशमी आनंददायिनी हो बेन,
–सुमंगलमालिनी हो बेन!
पाम्यां भगवती माता स्वानुभूति महा पावनी हो बेन,
–परम कल्याणिनी हो बेन!
ऊतरी शीतळतानी देवी शशी मुख धारती हो बेन,
–नयनयुग ठारती हो बेन!
निर्मळ आंखलडी सूक्ष्म–सुमति–प्रतिभासिनी हो बेन,
–अचल तेजस्विनी हो बेन!)

(65)

(साखी)

मातानी बहु लाडिली, पितानी काळज–कोर;
बंधुनी प्रिय बहेनडी, जाणे चंद्र–चकोर.

बहेनी बोले ओछुं, बोलाव्ये मुख मलकती हो बेन,
–कदीक फूल वेरती हो बेन!
सरला, चित्तउदारा, गुणमाळा उर धारिणी हो बेन,
–सदा सुविचारिणी हो बेन!.....आवी०

(साखी)

वैरागी अंतर्मुखी, मंथन पारावार;
ज्ञातानुं तल स्पर्शीने, कर्यो सफळ अवतार,

ज्ञायक–अनुलग्ना, श्रुतदिव्या, शुद्धिविकासिनी हो बेन,
–परमपदसाधिनी हो बेन!
संगविमुख, अेकल निज–नंदनवन–सुविहारिणी हो बेन,
–सुधा–आस्वादिनी हो बेन!....आवी०

(साखी)

स्मरणो भव–भवनां रूडां, स्वर्णमयी इतिहास,
–दैवी उर–आनंदिनी 'चंपा' पुष्प–सुवास।

कल्पलता मळी पुण्योदयथी चिंतितदायिनी हो बेन,
–सकलदुखनाशिनी हो बेन!
मुक्ति वरुं–मनरथ अे मात पूरो वरदायिनी हो बेन,
–महाबलशालिनी हो बेन!....आवी०

*

५. मंगलकारी 'तेज' दुलारी

(राग : निरखी निरखी मनहर मूरत)

मंगलकारी [१]'तेज' दुलारी पावन मंगल मंगल है;
मंगल तव चरणोंसे मंडित अवनी आज सुमंगल है,
....मंगलकारी०

श्रावण दूज सुमंगल उत्तम [२]वीरपुरी अति मंगल है,
मंगल मातपिता, कुल मंगल, मंगल धाम रु आंगन है;
मंगल जन्ममहोत्सवका यह अवसर अनुपम मंगल है,
....मंगलकारी०

[फाल्गुन कृष्णा दशमी मंगल, वांकानेर सुमंगल है,
मंगल मातपिता, कुल मंगल, मंगल धाम रु आंगन है;
मंगल ज्ञानमहोत्सवका यह अवसर अनुपम मंगल है,
....मंगलकारी०]

मंगल शिशुलीला अति उज्ज्वल, मीठे बोल सुमंगल हैं,
शिशुवयका वैराग्य सुमंगल, आतम-मंथन मंगल है;
आतमलक्ष लगाकर पाया अनुभव श्रेष्ठ सुमंगल है,
....मंगलकारी०

सागर सम गंभीर मति-श्रुत ज्ञान सुनिर्मल मंगल है,
समवसरणमें कुंदप्रभुका दर्शन मनहर मंगल है,
सीमंधर-गणधर-जिनधुनिका स्मरण मधुरतम मंगल है,
....मंगलकारी०

शशि-शीतल मुद्रा अति मंगल, निर्मल नैन सुमंगल है,
आसन-गमनादिक कुछ भी हो, शांत सुधीर सुमंगल है,
प्रवचन मंगल, भक्ति सुमंगल, ध्यानदशा अति मंगल है,
....मंगलकारी०

---

१ तेजबा = पूज्य बहिनश्री चंपाबेनकी मातुश्री

२ वीरपुरी = पूज्य बहिनश्री चंपाबेनका जन्मस्थान वर्धमानपुरी (वढवाण शहेर)

दिनदिन वृद्धिमती निज परिणति वचनातीत सुमंगल है,
मंगलमूरति–मंगलपदमें मंगल–अर्थ सुवंदन है;
आशिष मंगल याचत बालक, मंगल अनुग्रहदृष्टि रहे,
तव गुणको आदर्श बनाकर हम सब मंगलमाल लहें।
....मंगलकारी०

*

६. कुंवरीने खम्मा खम्मा करती

कुंवरीने खमा खमा करती, माता ज्ञानामृत पाती.
'धम्मो मंगलमुक्किट्ठंना' मंगल पाठो भणती,
माता निज कुंवरीने प्रेमे, धर्मामृत नित पाती.....कुंवरीने०

शान्त वदन निर्मळ नयनोमां आतमा उज्ज्वळ जोती,
धर्मरतन थाशे मुज कुंवरी, भणकारा अनुभवती.....कुंवरीने०

'अखंड आनंद ध्रुवपद तारुं' हालरडां शुभ गाती,
'सिद्धपणाने साधो कुंवरी', आशिष मंगल देती.....कुंवरीने०

ज्योतिषीओ ज्योतिष जोयां, आ कुंवरी कोई न्यारी,
विदेहनी विभूति आवी, अद्‌भुत मंगळकारी.....कुंवरीने०

आ कुंवरी छे सीमंधरनां स्मरणो उर धरनारी,
'कहानगुरु तीर्थंकर थाशे'—जिन धुनिमां सुणनारी....कुंवरीने०

निर्मळहृदयी अल्पभाषिनी, मिष्ट वचन वदनारी,
अलिप्त रहेशे परभावोथी, निजानंद रमनारी.....कुंवरीने०

सीमंधरना नंद पधार्या, शी पुण्यावलि जागी,
झूलो झूलो लाडली मारी, आजे हुं बडभागी.....कुंवरीने०

शान्त शीतळ परमाणु जगना, आवी वस्या तुज तनमां,
उपशमरस-अवतार ज्ञानसागर ऊछळे अंतरमां.....कुंवरीने०

चिरं जीवो चिरं जीवो जगदम्बा भवतारी,
स्वानुभूति मतिश्रुत लब्धिथी विश्व उजाळनहारी.....कुंवरीने०

૭. आज मंगळ मंदिर द्वार खूल्यां

आज मंगळ मंदिर द्वार खूल्यां, मंगळ द्वार खूल्यां रे;
स्वानुभूतिना स्वाद आज चाख्या, मंगळ द्वार खूल्यां रे.

हीरा-मोती-रतनथी वधावुं भगवती मात,
परम सुभाग्ये पधारियां, आज आनंद अति ऊभराय रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (१)

ओगणीस वर्षे उल्लसी, आतमलगन दिनरात,
वात गमे नहि विश्वनी, प्रभु पाम्ये ज होय निरांत रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (२)

भाळ्या निज भगवानने, चेतनघन अविकार,
आनंदसागर ऊछळ्या, अहो भवभ्रमण निस्तार रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (३)

ज्ञायकबाग महीं रमो, करो चिदामृतपान,
अप्रतिहत साधकदशा, झट बोलावे केवळज्ञान रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (४)

मति-श्रुत उदधि ऊछळ्या, तुज हृदये जगमात,
सीमंधर-कुंदकुंदनी तमे लाव्यां अलौकिक वात रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (५)

शीघ्र शीघ्र अविकल्पता, ध्रुव धामे धरी नेह;
सविकल्पे संभारतां—आ भरत छे के विदेह रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (६)

अनुभवभीनी स्पष्ट छे तलस्पर्शी तुज वाण,
'वचनामृत'ना पानमां डोल्युं आखुंय हिन्दुस्तान रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (७)

अमृतमीठी छांयडी, तारी अति सुखकार;
धर्मरत्न गुणमूर्ति छो, छो उपशमरस-अवतार रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (८)

झाझुं शुं कहुं मा तने, द्यो दानेश्वरी! दान,
शिवपुर साथे राखजो—अे पूरो अंतर अरमान रे
...मंगळ द्वार खूल्यां रे. (६)

*

८. आवी चैत्री कृष्णा अष्टमी (जातिस्मरण दिन)

[राग :–रूपला रातलडीमां]

आवी चैत्र कृष्णा अष्टमी आनंददायिनी हो बेन,
–सुमंगलमालिनी हो बेन!
पाम्यां भगवती माता जातिस्मृति महा पावनी हो बेन,
–परम कल्याणिनी हो बेन!
ऊतरी शीतळतानी देवी शशी मुख धारती हो बेन,
–नयनयुग ठारती हो बेन!
निर्मळ आंखलडी सूक्षम–सुमति–प्रतिभासिनी हो बेन,
–अचल तेजस्विनी हो बेन!

(साखी)

मातानी बहु लाडिली, पितानी काळज–कोर;
बंधुनी प्रिय बहेनडी, जाणे चंद्र–चकोर.

बहेनी बोले ओछुं, बोलाव्ये मुख मलकती हो बेन,
–कदीक फूल वेरती हो बेन!
सरला, चित्तउदारा, गुणमाळा उर धारिणी हो बेन,
–सदा सुविचारिणी हो बेन!.....आवी०

(साखी)

वैरागी अंतर्मुखी, मंथन पारावार;
ज्ञातानुं तल स्पर्शीने, कर्यो सफळ अवतार,

ज्ञायक–अनुलग्ना, श्रुतदिव्या, शुद्धिविकासिनी हो बेन,
–परमपदसाधिनी हो बेन!

संगविमुख, अेकल निज–नंदनवन–सुविहारिणी हो बेन,
–सुधा–आस्वादिनी हो बेन!....आवी०

(साखी)

स्मरणो भव–भवनां रूडां, स्वर्णमयी इतिहास,
–दैवी उर–आनंदिनी 'चंपा' पुष्प–सुवास।

कल्पलता मळी पुण्योदयथी चिंतितदायिनी हो बेन,
–सकलदुखनाशिनी हो बेन!
मुक्ति वरुं–मनरथ अे मात पूरो वरदायिनी हो बेन,
–महाबलशालिनी हो बेन!....आवी०

*

६. सीमंधरनाथजी ! मोह टाळजो,

सीमंधरनाथजी! मोह टाळजो, सुखद अेहवो धर्म आपजो;
परम भावथी ध्यान हुं धरुं, जिनपति! तने वंदना करुं. १.

जगत नाथजी! दर्श आपजो, सुखद अेहवी भक्ति आपजो;
परम भावथी ध्यान हुं धरुं, जिनपति! तने वंदना करुं. २.

जगत तातजी! कष्ट कापजो, सुखद अेहवुं स्वरुप आपजो;
परम भावथी ध्यान हुं धरुं, जिनपति! तने वंदना करुं. ३.

परम नाथजी! दुःख कापजो, अचल अेहवुं शर्म आपजो;
परम भावथी ध्यान हुं धरुं, जिनपति! तने वंदना करुं. ४.

परम देवरे! व्याधि कापजो, अचल अेहवी शांति आपजो;
परम भावथी ध्यान हुं धरुं, जिनपति! तने वंदना करुं. ५.

अचल देवरे! शत्रु वारजो, शरण ताहरुं सर्वदा हजो;
परम भावथी ध्यान हुं धरुं, जिनपति! तने वंदना करुं. ६.

विपत्ति दासनी सर्व कापजो, चरण पद्मनी सेवना हजो;
परम भावथी ध्यान हुं धरुं, जिनपति! तने वंदना करुं. ७.

१०. दर्शन दो माता मोरी,

(राग–कुंवरीने खमा खमा करती)

दर्शन दो माता मोरी, फरी फरी पाय पडुं तोरी.
सीमंधरनंदन! वंदन तुजने, भव्यातम–आधारा,
पूर्वाराधन–दोर सांधीने, प्रगटी ज्ञायकधारा....दर्शन० १
लाख वर्षमां दर्शन दुर्लभ, धीर वीर गंभीरा,
श्रुतलब्धियुत माता मळियां, पुण्योदय मुज फळिया....दर्शन० २
विदाय वसमी माता तारी, क्यांये चेन न पडतुं,
सरल वदननां दर्शन काजे, मनडुं खूब तलसतुं....दर्शन० ३
आश धरे हिजरातुं हैयुं—माता दर्शन देशे,
सूकी दिलडानी वाडी आ, अमृतथी सिंचाशे....दर्शन० ४
सूनां स्वर्णपुरीनां धामो, मनमंदिर मुज सूना,
दशे दिशाओ सूनीसूनी, माता! तुज विरहामां....दर्शन० ५
अम आंगणियां पावन करवा, मात विदेही पधार्यां,
अल्प समयमां टळवळता भक्तोने छोडी चाल्यां....दर्शन० ६
वत्सलतानुं अमृतझरणुं मात–हृदयमां वहेतुं,
अम सेवकना अंतर तापो क्षणमां दूर करी देतुं....दर्शन० ७
सीमंधरप्रभुना मंगलमय संदेशा भरते लाव्यां,
'कहानगुरु तीर्थंकर थाशे'—मधुरां अमृत पायां....दर्शन० ८
मीठी मीठी दृष्टि तारी मीठां अमृत पाती,
ज्ञानखजानो खोली खोली, दान भक्तने देती....दर्शन० ९
दिव्यशक्तिधारक! स्वर्गेथी गुरुवर संग पधारो,
भक्तोना मुरझाता मनने दर्शन दई विकसावो....दर्शन० १०
उपकारी! उपकार तमारा अम अंतरमां छाया,
स्वानुभूतियुत वचनामृतना जगमां धोध वहाव्या....दर्शन० ११
चिंतामणि कल्याणी माता! अतिशय गुणगणधारी!
शिवपुरीमां साथे राखो—अेक ज अरज अमारी....दर्शन० १२

卐 गुरुदेव प्रत्ये क्षमापाना-स्तुति 卐

गुरुदेव! तारां चरणमां फरी फरी करुं हुं वंदना,
स्थापी अनंतानंत तुज उपकार मारा हृदयमां. १.
करीने कृपादृष्टि, प्रभु! नित राखजे तुम चरणमां,
रे! धन्य छे अे जीवन जे वीते शीतळ तुज छांयमां. २.
गुरुदेव! अविनय कंई थयो, अपराध कंई पण जे थया,
करजो क्षमा अम बाळने, अे दीनभावे याचना. ३.
मन-वचन-काय थकी थया जाण्ये-अजाण्ये दोष जे,
करजो क्षमा सौ दोषनी, हे नाथ! विनवुं आपने. ४.
तारी चरणसेवा थकी सौ दोष सहेजे जाय छे,
क्रोधादि भाव दूरे थई भावो क्षमादिक थाय छे. ५.
गुरुवर! नमुं हुं आपने, अम जीवनना आधारने,
वैराग्यपूरित ज्ञान-अमृत सींचनारा मेघने. ६.
मिथ्यात्वभावे मूढ थई निजतत्त्व नहि जाण्युं अरे!
आपी क्षमा अे दोषनी आ परिभ्रमण टाळो हवे. ७.
सम्यक्त्व-आदिक धर्म पामुं, तुज चरण-आश्रय वडे;
जय जय थजो प्रभु! आपनो, सौ भक्त शासनना चहे. ८.

卐 प्रणिपात स्तुति 卐

हे! परम उपकारी कहानगुरुदेव, हे! प्रशममूर्ति भगवती माता! जन्म, जरा, मरणादि सर्व दुःखोनो अत्यंत क्षय करनारो एवो वीतराग पुरुषनो मूळधर्म आप उभय कृपामूर्तिए अनंतकृपा करी अमने आप्यो, ते अनंत उपकारनो प्रति उपकार वाळवा अमे सर्वथा असमर्थ छीए; वळी आप ऊभय उपकारी कई पण लेवाने सर्वथा निःस्पृह छो; जेथी अमे मन, वचन, कायानी एकाग्रताथी आपना चरणारविंदमां नमस्कार करीए छीए। आप ऊभय सत्पुरुषोनी परम भक्ति अने वीतराग पुरुषना मूळधर्मनी उपासना अमारा हृदयने विषे भवपर्यंत अखंड जागृत रहो एटलुं मागीए छीए ते सफळ थाओ! सफळ थाओ!

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

અનુભૂતિ તીર્થ મહાન, સ્વર્ણપુરી સોહે
यह कहानगुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले.